योग लीला पुस्तक

लेखक तथा प्रकाशक

शम्भूनाथ छट्टू (त्यागी अनाथ)

मुद्रक :

कृष्णा प्रिंटिग प्रेस, कोठी - भाग

श्रीनगर - काश्मीर

मूल्य ५ रुपये

(सर्वाधिकार सुरक्षित है)

योग लीला पुस्तक

लेखक तथा प्रकाशक

शम्भूनाथ छट्टू (त्यागी अनाथ)

मुद्रक :

कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, कोठी - भाग

श्रीनगर - काश्मीर

मूल्य ५ रुपये

शुद्ध किये हुये अशुद्ध शब्द

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२३	दास	दास सदा
१७	उपर	श्री दुगार्ये	श्री दुर्गायै
१७	४	त्रिनेत्र	त्रिनेत्रा
४३	७	उन्द्राक्षी	इन्द्राक्षी

★ ★ ★ ★

विषय सूची

अथ गुरुस्तुतिः ॥

ॐ ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवल ज्ञानमूर्ति द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् । एकं नित्यं विमलमचल सर्वधीसाक्षिभूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ १ ॥ स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेदवृत्तिर्ध्यायंध्यायं पशुपतिमुमाकान्त-मन्तर्निण्णम् । पायं पायं सपदि परमानन्दपीयूषधारा भूयोभूयो निजगुरुपदाम्भोजयुग्मं नमामि ॥ २ ॥ यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ । तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥ ३ ॥ नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम् । शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये ॥४॥ श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्दविग्रहम् । यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम् ॥५॥ अखण्डमण-डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥६॥ अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ७ ॥ हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन सर्वदेवस्वरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥८॥ गुरोर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षान्महेश्वरः । गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ९ ॥ ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरु पदम ज्ञान मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरु कृपा ॥१०॥ नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे । विद्यावतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह ॥ ११ ॥ नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे । सर्वाज्ञानतमोभेदभानवे चिद्घनाय ते ॥ १२ ॥ स्वतन्त्राय दया-क्लृप्तविग्रहाय परात्मने । परतन्त्राय भक्तानां भव्यानाम भव्यहेतवे ॥१३॥ ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम् । विवेकिनाम् विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ॥ १४ ॥ पुरस्ता-त्पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥१५॥ (इति गुरुस्तुतिः)

★ ★ ★

नम्रनिवेदन

सर्वा बाधा प्रशमनं, त्रैलोक्यस्या खिलेश्वरी एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥

हे माता सर्वेश्वरि आप तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शांत करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो ॥

मैं यह छोटी सी पुस्तक उन भक्त जनों के कर कमलों में समर्पित करता हूं जो अपने धर्म पर स्थिर रहकर तथा हिन्दू समाज को भी स्वधर्म पर चलाने का प्रचार करेंगे।

मैंने इस पुस्तक का नाम योग लीला पुस्तक रखा हैं, आज से बहुत वर्ष पहले (जबकि मैं एक निर्जन स्थान की एक धर्म शाला में अपना आसन जमाये रकखा था) यह योगलीला लिखी थी, तब से मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मैं इसको प्रकाशित करूं। परन्तु उदर पालन में लग कर अवकाश नहीं मिला। अब कुच्छ भक्तजनों के बारम्बार कहने पर यह योग लीला पुस्तक लिखी गयी ॥

इस पुस्तक में मैंने सम्पूर्ण इन्द्राक्षी लिखी है जो कि आजतक लोकोपकार के लिये प्रकाशित नहीं हुई थी, उनको इसका पाठ करने से सब प्रकार के बाधा विघ्न नष्ट होकर सुख प्रप्त होगा ॥

जो स्वधर्म पर रहकर तथा ब्राह्मी मुहूर्त में उठकर नित्य कर्मविधि (जोकि मैंने इसपर लिखी है) करके तथा शुद्ध आसन पर बैठ कर पाठारम्भ करेंगे, उन भक्तजन पाठकों को अवश्य ही दुख हरण होकर सुख की प्राप्ति होगी ॥

जैसा गीता जी की तीसरी अध्याय में श्री कृष्ण भगवान अपने मुखार्बिन्द से भक्त अर्जन देवको कहते हैं—

श्रेयान्स्वधर्मोविगुण: परधर्मात्स्वनुष्ठितात ।

स्वधर्मो निधनं श्रेयः पर धर्मों भया वहः ।।

अर्थः अपने धर्म पर स्थिर रहो, किन्तु अच्छी तरह आचरण किये हये दूसरों के धर्म से गुण रहित भी अपना धर्म उत्तम है । अपने धर्म में मरना भी कल्याण कारक है । और दूसरों का धर्म भय को देने वाला है ।

भगवान कहते हैं, कि गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त होना असम्भव है

ध्यान मूलं गुरोमूर्ति पूजा मूलं गुरो पदम ।
ज्ञान मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षा मूलं गुरो कृपा ।।

इसके अतिरिक्त मैंने इस में जो कुछ भी लिखा है । उनकी विषय सूची निम्न लिखित है प्रेस में छपाते समय इसमें कुच्छ अशुद्ध शब्द छप गये हैं। उनको मैंने शुद्ध करके दर्शित किया है, कृपया उनको ठीक प्रकार से देखें ।।

शुभमस्तु

त्यागी अनाथ शम्भो नाथ

पुस्तक मिलते का पत्तः-

(१) अनंतनाग नागबल पुरानी धर्म शाला का निचला कमरा ।

(२) श्री शम्भोनाथ छट्ट हब्बाकदल चींक्राल मुहल्ला श्रीनगर काशमीर ।

★ ★ ★
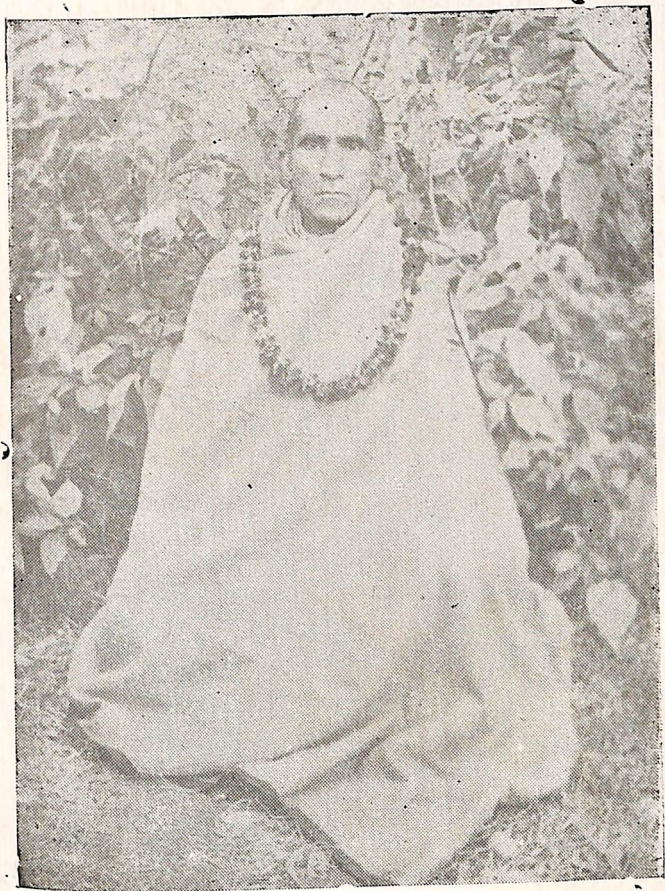
पं० शम्भू नाथ छट्टू (त्यागी अनाथ)
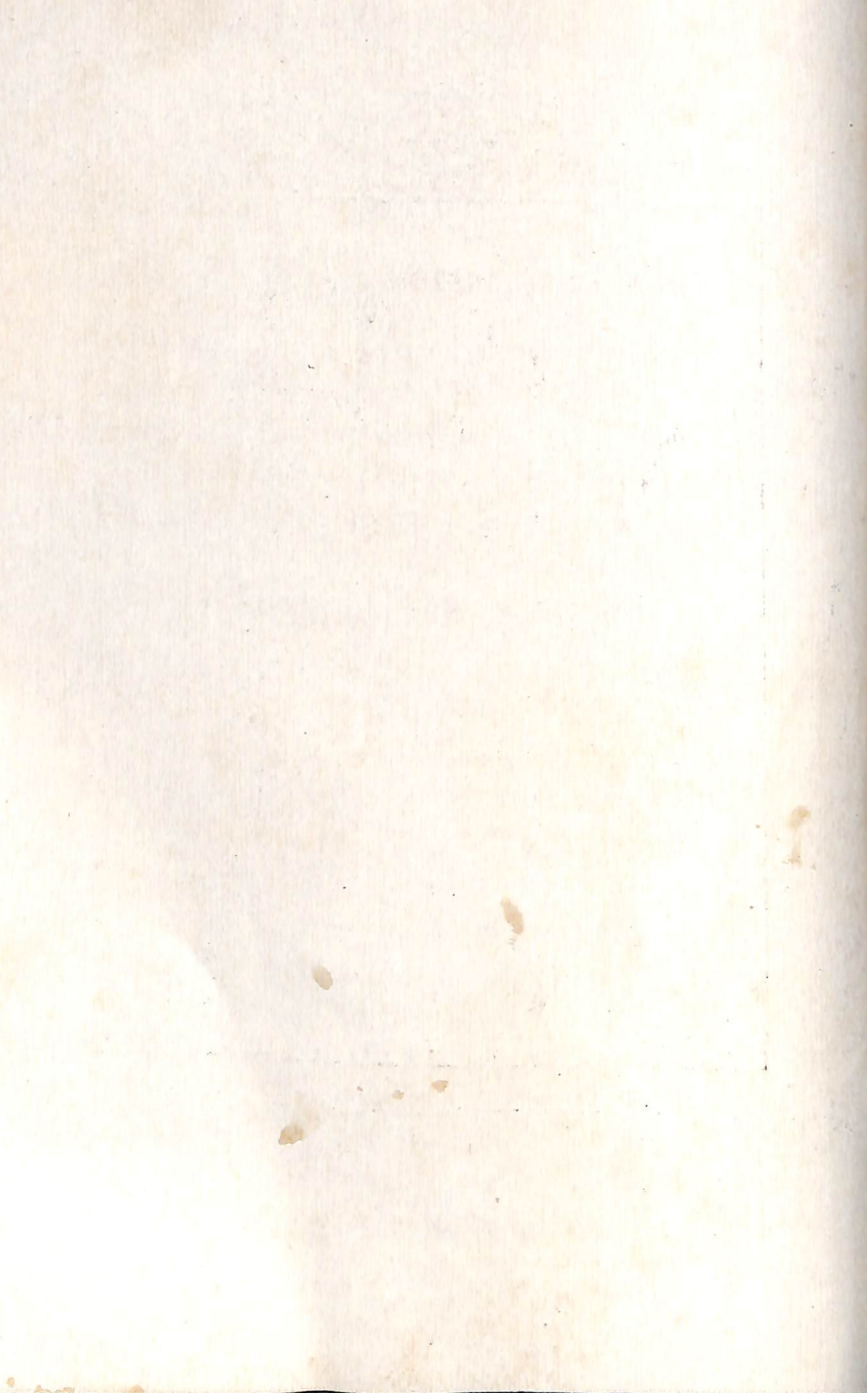
(१) धर्म का निर्णय

धर्म मनुष्य मात्र का सांझा है, धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष, अर्थात धर्म क्या है ?

१) मनुष्य जन्म पाकर स्वास २ ईश्वर भजन करे ।

२) अर्थ:- संसार के मनुष्य और प्राणी मात्र से भलाई करे।

३) काम :- अपने स्वार्थ को छोड कर परोपकार में शरीर को लगादे ।

४) मोक्ष .- मन संसारिक पदार्थों से निर्बन्धन रहे और मन विषयासक्त न हो।

अर्थात् इस धर्म से इस लोक और परलोक में सुख मिलता है । स्वर्ग में दिव्य शरीर और प्रकाश स्वरूप वस्त्र धारण करता है और शरीर से स्वाभाविक सुगन्धि मिलती रहती है । उस सुगन्धि से मिली हुंई वायु चलती है, और सदा एक जैसी ऋतु रहती है । गर्मी, सर्दी, आंधी, वर्षा वहां नही होती छः प्रकार का रस नहीं होता, अर्थात् जिह्वा का स्वाद नहीं होता। रस का विषय स्वर्ग में नहीं होता, अमृत पीने को मिलता है अमृत में कोई रस नहीं होता । केवल बुद्धि को महा तृप्त करता है और गंध, शब्द, स्पर्श, रूप यह दिव्य रूप से प्राप्त होते हैं और हमेशा वह शरीर शुद्ध रहते हैं, किसी प्रकार का मल दोष उन में नहीं रहता और स्पर्श के विषय में उन की इन्द्रियों से वायु का पात होता है। सब वायु सुगन्धि से पूर्ण होती है। किसी प्रकार

की अशुद्धता शरीर में उत्पन्न नहीं होती, ज्यों २ जीव ऊपर के लोकों में जाता है, एक एक विषय कम होता जाता है जो लोग अपने घर में बैठ कर या किसी सभा में बैठ कर अन्य पुरुष की निंदा करते २ हंसी मखोल उडाते हैं वह उस पुरुष के पापों को धोकर उन पापों के मैल से अपने शरीर पर मलकर उसके आयु भर के पापों का भागी बनते हैं। अतः निंदा से डरना मनुष्य की कायरता है प्रसन्ता से अपनी निंदा सुन कर उनको आशीर्वाद देना चाहिये वह मनुष्य स्वर्ग को जाते हैं ॥

(२) अकाल मृत्यु कैसे होती है ॥

देवता, अवतार, ऋषि, महात्मा इन की निंदा करने से आयु कट जाती है किंतु इन का संकल्प बलवान होताहैं। शुद्ध संकलप और पुण्यातमा संकल्पे प्रबल होता है। हमारे मैले संकलप से रची हुई आयु शुद्ध संकलप से कट जाती है, जैसे मिसमरेज़म करने वाला दूसरे के संकल्प को नष्ट करता है। दूसरा मूर्च्छित हो जाता है। जैसे शुद्ध लोहे से मैला लोहा कट जाता है, ऐसे ही शुद्ध संकल्प से दूषित संकल्पकी रची हुई आयु कट जाती है और बहुत लोगों के हा हा कार होने से भी आयु कट जाती है, किंतु सब्र जीवों के हृदय में आत्म सत्ता रहती है। ऐसे कारणों से अकाल मृत्यु होती है॥

(३) ओमकार की उत्पत्ति

ओम शब्द ब्रह्म का वाचक है। ब्रह्म अखण्ड शांत बोद्ध अचल रूप है। अजर (अर्थात् सदा एक जैसा रहने वाला) अमर है। सर्वव्यापक निराकार ज्ञान रूप है। उसमें सृष्टि से पहले स्फुरणता रूप माया शक्ति की उत्पत्ति होती है उस स्फुरणता रुप माया की आद उत्पति में (अ) का उच्चारण होता है और उसके मध्य में (उ) की उत्पत्ति, और स्फुरणाता रूप माया की समाप्ति पर (म) की उत्पत्ति होती है। अर्ध बिन्दु उस स्फरणता रूप माया में ज्ञान सत्ता है शब्द उस में शक्ति हैं। सृष्टि से पहले ब्रह्म से ओंम शब्द की उत्पत्ति हुई। ओम की ब्रह्म से उत्पत्ति है। इस वास्ते ओम शब्द का अभ्यास करने से जीव जल्दी ही ब्रह्म के साथ मिल जाता है। जहां तक स्फुरणता रूप माया की लहर उठती है वहां तक ही विराठ अर्थात् ब्रह्मांड की हद है। ब्रह्म की उस स्फुरणता रूप माया को हिरण्य गर्भ कहते हैं। हिरण्य उसका नाम इस वास्ते है कि स्वर्ण जैसा उसका रंग है गर्भ इस वास्ते कहते हैं कि सूर्य चन्द्रम, तारागण लोका लोक चौदह भवन उसकी हद के अंदर अर्थात् उसके गर्भ में स्थित है। इस वास्ते उसका नाम हिरण्य गर्भ है। उसकी स्फुरणाता रूप माया की हद तक आ—उ—म तीनों अक्षर शब्द रूप से व्यापक हैं अर्ध बिन्दु उसमें ज्ञान सत्ताभी व्यापक है। ओम शब्द के अंदर सारे ब्रह्माड की स्थिति है। जो पुरुष शुद्ध चित्त से होकर ओम का उच्चारण और ध्यान करे उसके ध्यान में सम्पूर्ण हिरण्य गर्भ आजाता है, अर्थात् ब्रह्माण्ड सारा

ही उसके अन्दर आजाता है, और सब देवी देवता जो ब्रह्माण्ड के अन्दर हैं उसमें आजाते हैं । उसके ध्यान में हिरण्य गर्भ और ब्रह्माण्ड ऐसे आता है जैसे पीपल के बीज के अन्दर पीपल का बृक्ष मौजूद होता है जब बीज का पर्दा फटता है तो सम्पूर्ण वृक्ष फल फूल पत्ता डाल सब दिखाई देता है । ऐसे ही ओम शब्द का अभ्यास करने से जब मैल का पर्दा फटेगा तो सारां ब्रह्माण्ड उसमें दिखाई देगा ॥

(४) गायत्री मंत्र का अर्थ

ओम ॐ भूर्भुवः स्वा । तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ॐ

अर्थ :– सर्वत्र सर्वदा रक्षक, प्राणाधार दुःख नाशक, सुख स्वरूप, सुख दाता वह प्रसिद्ध प्रभु उत्पन्न करने वाले का सर्व श्रेष्ट शुद्ध स्वरूप, पाप नाशक, दिव्य स्वरूप का हम ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को प्रेरित कर सद मार्ग में लगाए ॥

★ ★ ★

(५) बालकों के लिये संक्षिप्त नित्यकर्मविधि

प्रातः ब्राह्मी मंहूर्त में नींद से उठना चाहिए रात के अन्तिम प्रहर का तीसरा भाग ब्रह्मी मुहूर्त कहलाता है । नींद सें उठते ही प्रभु स्मृण करते हुये पढें — प्रातः स्मरामि भव भीति महार्ति शांत्यै, नारायणां गरुढ वाहनम्

अब्जनाभम् । ग्रहाभिभूत वर वारुणमुकित हेतु, चक्रायुधं तरुण वारिज पद्म पत्रम् ।। यह श्लोकपढ कर दायें हाथ का दर्शन करते हुये पढें । – "कराग्रे वसति लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती कर मूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्" बिस्तरे से उठते ही शौच को अवश्य जायें, शौच, लघु शंका आदि करते समय मौन रखें और महागायत्री अपने दाहिने कान में रखें। शौच के बाद पीली मिट्टी को उठाते पढें, अःक्रम्य वाजिनपृथिवीमग्तिमिच्छा रुचात्वम् । भूम्या वृत्वायनो ब्रूहि, यतः खने मते वयम् । (उसके बाद पीली मिटी दस बार बायें हाथ में और सात बार दोंनों हाथों में मलें । हाथ धोते समय यह पढें । योविश्व चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त उतविश्व तस्पात् । संबा हुभ्यां धमति संपतत्रै ध्यावा पृथिवी जनयन्देव एकः ।।

अब यज्ञो पवीत को कान से निकालकर उसको अपने दाहिने बाजू में रखकर अपने बायें पैर को धोते हुये पढें, नमोस्त्वऽनन्तांय सहस्र मूर्तये सहस्र पादाय क्षिशिरोरु बाहवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटी युगधारिणेनमः (अब दाहिने पैर को धोते हुये पढना) नमः कमलना भाय नमस्ते जलशायिने नमस्ते केशवानंत वासुदेव नमोऽस्तुते (अब अपने दाहिने हाथ में जल की मुठी लेकर पढना) गङ्गा प्रयाग गयनैमिष पुष्करादि तीर्थानि यानि भुवि सन्ति हरिप्रसा– दात्, आयान्तु तानि करपद्म पुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदन– स्य निशाकलङ्कम् ।। (अब उस पानी से मुख धोते पढना) तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः शंस्यो अरुरुषो धूर्तिः प्रणाङ्गमर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते ।। (अब यज्ञोंपवीत को

अपने दोनों हाथों के अङ्गुठों में रख कर तीन बार पढना) ॐ महा गायत्रयै नमः ॐभूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात ॐ। अब यज्ञोपवीत को पहले अपने दाहिने बाजू मे रख कर फिर गले में रखना) यज्ञोपवीतं परमं पबित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रयं प्रतिमुच शुभ्रं, यज्ञो पबीतं बलमस्तु तेजः यज्ञो पवीतंमसि, यज्ञस्य त्वा उपवीतेन उपनह्यामि (फिर स्नान करते हुये अपने शिर को दोनों हाथो से पानी छोडते पढना) तद्विष्णो परमं पदं सदा पश्यंति सूर्यःदिवीव चक्षुराततम् तद्विप्रासो विपन्यवो जाग्रवाँसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् । (फिर मांथे को दाहिने हाथ से पानी छिडक्ना) ॐ भू ॐ भुवः ॐस्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं (फिर अपने दोनों हाथ अपने दोनों कनों के सीध में रख कर पढना) ॐ हंसः शुचिषद्वसरऽन्तरिक्ष–सद्धोता वेदिषदऽतिथिदुरोण सत् नृषद्वरसद्दत सद् व्योम सदऽ–ब्जा गोजा कृतजा अद्रिजा क्रतम् (दोनों हाथों से पानी उठाना और छोडना (ॐ नमों देवेभ्यः (यज्ञो पवीत बाजू से निकालकर गले में रखकर पढना) कंठोपवीती स्वाहा ऋषिभ्यः (बायें तरफ जन्यू रखना) स्वधा पितृभ्यः (फिर दाये तरफ रखना) आब्रह्महतम्ब पर्यन्तं ब्रह्माडं सचाचरं जगत्तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु ३ एवमस्तु (फिर कपडे लगाने) युवा सुवासाः पगिवेतु आगात्सा उच्छ्रे यान्भवति जायमानः तन्धी–रासः कवय उन्नयन्ति साध्यो मनसा देव यंतः (लँगोटे को निचोडना) अहमत्कुले तुये जाता अपुत्रा गोत्र बर्जिताः ते पिबन्तु मया दतं वस्त्र निष्पीनोदकम् ॥ फिर १०८ बार गायत्री का मानसिक जप करना ॥

★ ★ ★

(६) हनुमान चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार ।
वरणौं रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार ॥
बुद्धि हीन तनु जान कै सुमिरों पवन कुमार ।
बल बुद्धि विध्या देहु मोहि हरहु क्लेशविकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनु मान ज्ञान गुण सागर, जय कपीशतिहं लोंक उजागर ॥ राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनी पुत्र पवन सुत नामा ॥ महाबीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥ कंचन वर्ण विराज सुवेशा । कानन कुन्डल कुंचित केशा ॥ हाथ वज्र अरु ध्वजाविराजै । कांधे मूंज जनेऊ साजे ॥ शंकर सुवन केशरी नंदन तेज प्रताष महा जगबन्दन ॥ विध्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिवे को आतुर ॥ प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया । राम लषण सीता मन बसिया ॥ सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ॥ भीम रूप धरि असुर संहारे । राम चंद्र के काज संवारे ॥ लाय संजीवन लषण जिवाये । श्री रघुवीर हर्षि उर लाये ॥ रघुपति कीनी बहुत बडाई । तुम मम प्रिय भरत सम भाई ॥ सहस बदन तुमरो यश गांवें । अस कहि श्री पत्ति कंठ लागावैं ॥ सनकादिक ब्रह्मादि मुनीषा । नारद्र शारद सहस अहीशा ॥ यम कुबेर दिगपाल जहांते । कवि कोविद कहि सके कहांते ॥ तुम उपकारी सुग्रीवहि कीना ॥ राम मिलाय राजपद दीना ॥ तम्हरो मंत्र विभीषण माना । लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥

युग सहस्त्र योजन जो भानू । लीला ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलदि लांघ गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरी तेते ।।
राम दुवारे तुम रखा वारे । होत न आज्ञा बिनु पैठारे ।।
सब सुख लहैं तुम्हारी शरणा तुम रक्षक काहू को डरना ।।
अपना तेज सम्हारी आपे । तीनों लोक हांकते कांपे ।।
भूते पिशाच निकट नहीं आवै । महाबीर जब नाम सुनावैं ।।
नाशैं रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमन बीरा ।।
संकट ते हनुमान छुडावें । मन कर्म वचन ध्यान जो लावें ।।
सब पर राम तपस्वी राजा । तिनको काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो को ई लावैं । तासु अमित जीवन फल पावै ।।
चारों युग पर ताप तुम्हारा । है प्रसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारें । असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के धाता । अस वर दीन जान की माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा । सादर तुम रघुपति पति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावे । जन्म जन्म के दुख बिसरावैं ।।
अन्त काल रघुवर पुर जाई । जहां जन्मे हरि भक्त कहाई ।।
और देवता चित न धरई । हनुमत सेय सर्व सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बल बीरा ।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं । कृपा करो गुरु देव की न्याईं ।।
ये शत बार पाठ कर जोही छुटे बन्दि महा सुख होई ।।
जो यह पढे हनुमान चालीसा । होई सिद्धि साखी गौरीशा ।।
तुलसी दास हरिचेरा । कीजै नाथ हृदय महं डेरा ।।

दोहा — पवन तनय संकट हरण मंगल मूर्ति रूप ।
राम लषण सीता सहित हृदय बसो सुरभूप ।।

श्री हनुमतेनमः

(७) संकट मोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द – बाल समय रवि भक्ष कियो तब तीनहुं लोक भयो अन्धियारो । ताहि सो त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ॥ देवन आन करी बिनती तब छाडि दियो रवि कष्ट निबारो । को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तुम्हारो ॥१॥

बालि की त्रास कपीश बसे गिरि जात महा प्रभु पंथ निहारो । चौकि महामुनी शाप दियो तब चाहिये कौन विचार विचारो ॥ कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास को शौक निबारो । को० ॥२॥ अंगद के संग लेन गए सिय खोज कपीश ये बचन उचारो जीवत ना बचिहौं हमसों ज़ो बिना सुधि लाय इहां पगु धारो ॥ हारि थके तट सिंधु सबे तब ले सिय की सुधि प्राण उबारो । को० ॥३॥ रावणत्रास दियो सिय को तब राक्षस को कहि शोक निवारो ॥ ताहि समै हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो । मांगत सीता अशोक सो आगि तो दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो ॥ को० ॥४॥ बाण लग्यो उर लक्ष्मण के तबु प्राण तजे सुत रावण मारो । ले गृह वैद्य सुखेन समेत तबै गिरि द्रोण सुवीर उपारो ॥ आनि संजीवन हाथ दई तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो । को० ॥५॥ रावण युद्ध अजान कियौ तब नाग कि फांस सबै सिर डारो । श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो तब संकट भारो । आन खगेश तबै हनुमान जु बन्धन काटि सुत्रास निवारो, को० ॥६॥ बन्धु समेत जब अहिरावण ले रघुनाथ पताल सिधारो देवहिं

पूजि भलि विधि सों बलि देहु सबै मिलि मंत्र विचारो ।। जाय सहाय भये तब ही अहिरावण सैन्य समेत संहारो । को० ।।७।। काज किये बड देवन के तुम बीर महा प्रभु देख विचारो ।। कौन सु संकट मेरो नहि जो तुमसों नहि जात है टारो । वेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कुछ संकट होय हमारो ।। को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तुम्हारो ।।८।।

दोहा – लाला देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर ।
वज्र देंह दानव दलन, जय जय जय कपिशूर ।।
।।इति श्रीं संकट मोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्णम् ।।

।। श्री कृष्णाय नमः ।।

(८) श्री कमलनेत्र स्तोत्र

श्री कमल नेत्र कटि पीताम्बर अधर मुरली गिरिधरम् । मुकुट कुन्डल करल कुटिया सांवरे राधेवरम् ।। १ ।। कूल यमुना धेनु आगे सकल गीपियां के मन हरम् । पीतवस्त्र गरुड वाहन चरण सुख नित सागरम् ।।२।। करत केलि कलोल निशिदिन कुन्ज भवन उजागरम् । अजर अमर अडोल निश्चिल पूरुषोतम अपरापरम् ।। ३ ।। दीनानाथ दयाल गिरिधर कंस हिरणाकुश हरम् । गल फूलमाल विशाल लोचन अधिक सुन्दर केशवम् ।। बंशीधर बसुदेव छलिया बल छल्यो हरि वामनम् ।।४।। जल डूबते गज राख लीनो लंका छेद्यो रावणम् । सप्त द्वीप नवखंड चौदह भुवन कीनो राम जी एक पलम् ।।५।। द्रोपदी जी की लाज राखी कहां लौ

उपमाकरम् दीनानाथ दयाल पूरण करुणामय करुणा करम् ॥६॥ कविदत्त दास विलास निशि दिन जपत नित नागरम् । प्रथमे गुरु जी के चरण बंदो यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ॥ ७ ॥ आदि विष्णु जुगादि ब्रह्मा सेवित्ते शिव शंकरम् । श्री कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण यदुपति केशवम् ॥ ८ ॥ श्री राम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवम् । श्री राम कृष्ण गोविन्द माधव वासुदेव श्री वामनम् ॥ ९ ॥ मच्छ कच्छ बाराह नरसिंह पाहिं रघुपति पावनम् । मथुरा में केशवराय विराजे गोकुल बालमुकन्द जी ॥ श्री वृन्दावन में मदन मोहन गोपीनाथ गोविन्द जी ॥१०॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहाँ श्री पति अवतरे । धन्य यमुना का नीर निर्मल ग्वाल बाल सखावरे ॥११॥ नवनीत नागर करत निरंतत् शिव विरंचि मनमोहितम् । कालिन्दी तट करत क्रीड़ा बाल अद्भुत सुन्दरम् । १२॥ ग्वालबाल सब सखा विराजे संग राधे वामिनी ॥ बंसी बट तट निकट यमुना मुरली की टेर सुहावनी ॥१३॥ भंज राधे रघुवंश उत्तम परम राजकुमार जी । सीता के पति भक्त रक्षक जगत प्राण आधार जी ॥१४॥ जनक राजा प्रण रखे धनुष बाण चढावहीं । सती सीता नाम जाके श्री रामचन्द्र बस-पावहीं ॥ १५ ॥ जन्म मथुरा खेल गोकुल नंद के हरी नन्दनम् । बाल लीला पतित पावन देवकी वसुदेवकम् ॥१६॥ श्रीकृष्ण कलिमल हरण जाके जो भजे हरिचरण को । भक्ति अपनी दीजे माधव भवसागर के तरण को ॥ १७ ॥ जगन्नाथ जगदीश स्वामी श्री बद्रीनाथ विश्मभरम् । द्वारिका के नाथ श्रीपति केशवं प्रणाम्यहम् ॥१८॥ श्री कृष्ण अष्टपद पढते निशिदिन विष्णुलोकस:गच्छते । श्री गुरु रामानुज अवतार स्वामी कवि दत्तदास समाप्ते ॥

(९) दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी । नमो नमो अम्बे दुख हरनी ॥
निरंन्कार है ज्योति तुम्हारी । तिहूं लोक फैली उजियारी ॥
शशि लिलार मुख महा विशाल । नेत्र लाल भृकुटी विकराल ॥
रूप मात को अधिक सुहावे । दरश करत जनअति सुख पावै ॥
तुम संसार शक्ति ले कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ॥
अन्न पूर्णा हुई जगपाला तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥
प्रलय काल सब नाशन हारी । तुम गौरी शिव शंकर प्यारी ॥
शिवी योगी तुम्हरे गुण गावें । ब्रह्मा विष्ण तुम्हें नित ध्यावें ॥
रूप सरस्वती को तुम धारा । दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उवारा ॥
धरा रूप नरसिंह को अम्बा । परगट भई फाड कर खम्बा ॥
रक्षा करि प्रहलाद बचायो । हिरणा कुश को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मी रूप धरो जगमाहीं । श्री नारायण अंग समाहीं ॥
क्षीर सागर में करत विलासा । दया सिन्धु दींजे मन आसा ॥
हिंग लाज में तुम्हीं भवानी । महिमा अमित न जात बखानीं ॥
मातंगी अरु धूमावती माता । भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ॥
श्री भैरव तारा जग तारिणी । क्षिन्नभाल भव दुख निवारिणी ॥
केहरी वाहन सोह भवानी । लंगूर वीर क्षलत कगवाणी ॥
कर में खपर कंजविराजै । जाको देख काला डर भाजै ॥
सोहे और अस्त्र त्रिशाला । जाते उठत् शत्रुहिय शाला ॥
नाग कोटी तुम्हीं विराजत । तिंहु लोक में डंका बाजत ॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे । रकत बीज शंखन संहारे ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी । जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥
रूप कराल कालीका धारा । सेनासहित तुम तिहि संहारा ॥
परी गाढ संतन पर जब जब । भई सहाय मातु तुम तब तब ॥

अमर पुरी अरु सब लोका । तब महिमाहा सब रहे अशोका ।।
बाला में है ज्योति तम्हारी । तुम्हें सदा जो पूजे नर नारी
प्रेम भक्ति से जो जस गावे । दुख दरिद्रता निकट नहीं आवे ।।
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई । जन्म मरण ताको छुटि जाई ।।
जोगी सूर मुनि कहत पुकारी । योग न हो बिन भक्ति तुम्हारी ।।
शंकर आचारज तप कीनों । काम और क्रोध जीति सब लीनों ।।
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को । काहुं काल नहीं आवे तुम को ।।
शक्ति रूप को मरम न पायो । शाक्ति गई तब मन पछतायो ।।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी । जय जय जय जगदम्ब भवानी ।।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा । दई शक्ति नहीं कीनविलम्बा ।।
मोकौ मात कष्ट अति घेरौ । तुम बिन कौन हरे दुख मेरौ ।।
आशा तृष्णा निपट सतावे । रिपु मूरख माहि अति डरावे ।।
शत्रु नाशा कीजै महारानी । सुमिरौं, इकति तुम्हें भवानी"
करो कृपा हे मातु दयाला । ऋद्धि सिद्ध हे करहु निहाला ।।
जब लगि जिय दयाफल पाऊं । तुम्हरों यश मैं सदा सुनाओं ।।
दुर्गा चालीसा जोगावें । सब सुख भाग परम पद पावैं ।।
त्यागी अनाथ शरण निज जानी । करहु कृपा जगदम्ब भवानी ।

★ ★ ★

(१०) अथ विन्ध्येश्वरी स्तोत्र ।।

निशुम्भ शुम्भ गर्जनी प्रचंड मंड खंडनी ।
बने रणे प्रकाशिनी, भजामिविन्ध्य वासिनी ।।
त्रिशूल मुन्डधारिणी, धराविघत हारिनी ।
गृहे गृहे निवासिनी, भजामिविन्ध्य वासिनी ।।
दरिद्र दुःख सारिणी, सदा विभूति कारिणीह ।

वियोग शोक हारिणी 1 भजामिविन्ध्य वासिनी ll
लसत्सुलोल लोचन, लतासन वरे पदम् 1
कलाप शैल धारिणी, भजामि विन्ध्य वासिनी ll
करौ मुदा गदा धरा, शिवा शिवः प्रदायनी 1
घरा वरा नना शुभा 1 भजामि विन्ध्य वासिनी ll
ऋषिन्द जामिनी प्रद, त्रिधास्य रूप धारिणी 1
जले धने निवासिनी 1 भजामि विन्ध्य वासिनी ll
विशिष्ट शिष्ट कारिणी विशाल धरू धारिणी 1
महावरे विलासिनी, भजामि विनध्य वासिनी ll
पुरंदरादि सेविता सुरारि भंग खणिढता 1
विशुद्ध बुद्धि धारिणी, भजामि विन्ध्य वासिनी ll
त्यागी ग्रनाथ दुखी भया, करो कृपा जगदम्बा 1
भुक्ति मुक्ति प्रदायनी 1 भजामि विन्ध्य वासिनी ll

★ ★ ★

(११) सप्त श्लोकी दुर्गा

शिव उवाच :–

देवि त्वं भक्त सुलभे सर्व कार्य विधायिनी 1
कलौ हि कार्य सिद्धयर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ll

अर्थं :– भगवान शिव देवी माता से कहते कि हे देवी तुम कलियुग के लोगों केसर्व कार्य सिद्ध होने का उपाय बताइये ll

देव्यु वाच :–

श्रृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्ट साधनम् 1
मया तवैव स्नेहेना प्यम्बा स्तुति 1 प्रकाश्यते ll

अर्थ :— देवी कहती है हे देव सुनो जो कलियुग का सब से उत्तम साधन है वह अम्बस्तुति (अम्ब माता को कहते है) प्रकट करती हूं ॥

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हिसा ।
बलादाकृष्य मोहाय महा माया प्रयच्छति ॥१॥

अर्थ :— भगवती महा माया देवो ज्ञानियों के चित्त को बल पूर्वक खींचकर मोह में डाल देती है । वह ही इस सम्पूर्ण जगत की सृष्टि करती हैं । तथा वे ही प्रसन्न होने पर मनुष्यों को मुक्ति के लिये वरदान देती है ॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जंतोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या
सर्वोप कारकरणाय सदार्द्र चिता ॥२॥

अर्थ :— मां दुर्गे आप स्मृण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिंतन करने पर उन्हें परम कल्याण मयी बुद्धि प्रधान करती है दुख दरिद्रता और भय हरने वाली देवि. आप के सिवा दूसरी कोन है जिसका चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है ।

सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ सधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥३॥

अर्थ :— है नारायणि आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली शर्णागत वत्सला तीन नेत्र धारने वाली एवं गौरी हो तुम्हें नमस्कार है ॥

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे ।
सर्व स्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥४॥

अर्थः शरण में आये हुये दीनों एवं पीडितों की रक्षामें संलग्न रहने वाली तथा सब की पीडा दूर करने वाली नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है ।।

सर्व स्वरूपे सर्वेंशे सर्व शक्ति समन्विते ।
भये भ्यस्त्राहिनो दवि दुर्गे देवि नमोस्तुने ।।५।।

अर्थः– सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देविः सब भयों से हमारी रक्षा करो आप को नमस्कार है ।।

रोगान शेषान पहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयांति ।।६।।

अर्थ :– देवि ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती है और कुपित होने पर मनो वांच्छत् सभी कामनाओं का नाश करती है जो लोग आपकी शर्ण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं, तुम्हारी शर्ण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शर्ण देने वाले हो जाते हैं ।।

सर्वा बाधा प्रशमनं, त्रैलोक्यस्या खिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ।७।

अर्थ :— सर्वेश्वरि आप इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बधाओं को शांत करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो ।।

★ ⚜ ★

॥ श्रीदुर्गायै नमः ॥

(१२) श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥१॥
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः ।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥३॥
सर्वन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी ।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः ॥४॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमंञ्जीररञ्जिनी ॥६॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णावी तथा ।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥९॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥१०॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥११॥

अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी ।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥२३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्वनी ।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥१४॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।
कात्यायनी च सावित्री, प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च ।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शश्वतीम् ॥१७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैं सुरवरैरपि ।
राजानो दासतां याति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥१९॥
गौरोचनालक्तककुङ्कुमेन
सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण ।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो
भवेत् सदा धारयते पुरारिः ॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् संपदां पदम् ॥२१॥

इति श्रीविश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णं ।

★ ⚜ ★

(१३) सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥१॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥४॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥१॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ॥२॥
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ॥३॥
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥४॥
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥५॥
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी ।

क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥६॥
हुं हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ॥
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥७॥
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥८॥
सां सीं सूं सप्तशतीदेव्या मंत्र सिद्धिं कुरुष्व मे ॥
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ॥
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतींपठेत् ॥
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥

श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वती संवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

ॐ तत्सत्

प्रति दित प्रातः काल उपर्युक्त स्तोत्र का पाठ करने से सब प्रकार के बाधाविघ्न नष्ट हो जाते हैं ।

★ ★ ★

(१४) श्रीदुर्गा जी की आरती

जगजननी जय ! जय !! (मां ! जगजननी जय जय !!)
भयहारिणि, भवतारिणि भवभामिनि जय ! जय !! जग०
तू ही सत-चित्-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा । जगजननी०
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
अमल अनंत अगोचर अज आनंदराशी, ॥ जय०

अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी ।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर संहारकारी, ।। जय०

तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया ।
मूलप्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ।। जग०

राम, कृष्ण तू, सीता व्रजराणी राधा ।
तू वांञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ।। जग०

दश विद्या, नव दुर्गा नानाशस्त्रकरा ।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा ।। जग०

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू, ।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू, ।। जग०

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा ।
विवसन विकट-स्वरूपा, प्रलयमयी धारा ।। जग०

तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना ।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना, ।। जग०

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे ।
कालातीता काली, कमला तू वरदे, । जग०

शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी,
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले ! वेदत्रयी, ।। जग०

हम अति दीन दुखी मां विपत - जाल घेरे ।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे, ।। जग०

निज स्वभाववश जननी ! दयादृष्टि कीजै ।
करुणा कर करुणामयि ! चरण - शरण दीजै ।। जग०

★ ★ ★

(१५) देवीमयी

तव च का किल न स्तुतिरम्बिके !
सकलशब्दमयी किल ते तनुः ।
निखिलमूर्तिषु मे भवदन्वयो
मनसिजासु बहिःप्रसरासु च ।१।

इति विचिन्त्य शिवे ! शमिताशिवे !
जगति जातमयत्न वशादिदम् ।
स्तुतिजपार्चनचिंतनवर्जिता,
न खलु काचन कालकलास्ति मे ।।

अर्थः "हे जगदम्बिके ! सन्सारमें कौन - सा वाङ्मय ऐसा है, जो आपकी स्तुति नही है, किंतु आप का शरीर तो सकल-शब्दमय है । हे देवि ! जब मेरे मनमें सन्कल्पविकल्पात्मक रूपसे उदित होने वाली एवं सन्सार में दृश्यरूपसे सामने आनेवाली सम्पूर्ण आकृतियोंमें आपके स्वरूपका दर्शन होने लगा है । हे समस्त अमङ्गलध्वंसकारिणि कल्याणस्वरूपे शिवे ! इस बात को सोचकर अब बिना किसी प्रयत्नके ही सम्पूर्ण चराचर जगत्में मेरी यह स्थिति हो गयी है कि मेरे समयका क्षुद्रतम अंश भी आपकी स्तुति, जप, पूजा अथवा ध्यानसे रहित नहीं है, अर्थात् मेरे सम्पूर्ण जागतिक आचार-व्यवहार, तुम्हारे ही भिन्न भिन्न रूपों के प्रति यथोचित रूप से वयबहृत होने के कारण आपकी पूजा के रुप में परिणत हो गया है" ।।

★ ★ ★

(१६) शिव निर्वाण

शिव शंकर भव भय हर ... हर लगयो चरणन् ।
गुरु लगयो पादि कमलन ... सत् गुरु लगयो चरितन ॥

चरणन् तल वार वरतस् ... वरदा छुक शरणन्,
शरणय च्य आस कासतम ... मल म्य अन्तः करणन्
कर शङ्कर कर रटहस ... कर अर हर मरणन्,
मर मर छुस ज्यन मरुनुक ... अमरेश्वर भगवन्,
पादि कमलन तल म्य पालतम, ... पालवुन छुक कालहन्
हनि हनि चय शिव वुछहथ ... यव दय गलि हन हन, शिव०

दय अद्वय दय म्य गच्छतम ... कर हर हर निशि दिन,
दीन दयाल कन म्य थावतम ... दीन वचनन त वदनन
जर जर छुम जुजरणकुय ... जीरनावतम मत हन्
हननावन हननावतम ... मन्नि मुह युथ मुनियन्
देहपुष्ट मन तुष्ट थावतम ... देवजुष्ट छुक दुष्टहन्
पानै ईश्वर पानै तोषतम् ... पान वन्दयो तोषणन् । शिव०

अन्त कुस जान्य च्य अन्नतस् ... सन्त व्यसरेय चिंतनन्
क्याह निश्चय करि वेदान्तीय ... यत्य वेद लगि पन्थनन्
ब्रह्मादिक गय मोहस ... तत्व चोन क्या व्यजरन
तत्पुरुष चय तत्व म्य भासतम ... वथ म्य हावतम जाननन्
गथ छय सिद्ध शुद्ध मुनियन् ... सथ छय्म शाप मोचनन्
शाप मोचन ज्ञान लोचन ... पार्यं आर्या लोचनन शिव०

तेजोरुप तेज च्य छुक ... सोम सूर्य त अग्नं
तेजोरूप च्य भासान ... बाह्य अन्तर यूगिपन्
स्वप्रकाश त स्वानुभवगम ... शांततेजाः ज्ञानियन्

शिव म्यति दित कर्म सुम स्यज ... ज्ञान य्छ जन कादिकन
ज्ञान जानुन जाननीय चय ... क्यह् भु ज्ञान चानि जांनि व्यन
ज्ञान उपदेश वार वरतम् ... फर अज्ञान पटलन । शिव०

निष्कारण सर्व कारण ... चय कारण कारणन्
त्रेकार छुक चय कारण ... सृष्ट स्थिच तय प्रलयन्
चय कर्ता च्य भर्ता ... चय हर्ता जगतन्
व्याप्य व्यापक भाव व्यापीत ... चय निरंतर भवनन्
भजि क्याह् वन चज्जि क्याह् छुक ... युसन जोन कांसि जान्य व्यन
ज्ञान सारोय चान्य दया ... चानि कृपा भगवन् । शिव०

देव पुज छुक देव पूजनीय ... पूजा व्यध पूजनन्
विजि विजि बजि पजि पूजह्थ युथ च पूजनख विष्णन् ।
भाव बामन फुलनाविथ ... माल करह्य कौसमन्
बो सोंमन्य व्यन लागह्य ... म्यय गुन्ध्य करह्य कौमुदन ।
सोवुन्द यछि पछि हंदि पोष ... लागह्य पाद कमलस
पादि कमलन तल म्य पालतम ... तल ह्यथ क्यथ विघ्नन । शिव०

शुद्ध निर्मल शिव पूजह्थ ... यव सपन्य शुद्ध मन
शुद्ध मन च्यय ध्यान धारिथ ... शुद्ध स्फाटिक विकसन
नीलकण्ठस च्यय हटि वासुक ... चित्त् आत्मस् तमोगुण
सुधा धारा गङ्ग ह्यरि शेरि (छ्यय) तारत्र्न् स-ज्ञि नरकन
शिवा धारमच वाम भागस ... च्यत शक्त चित्त् आत्मन
धर्म रोप वृषभ वमि त्रिशूल ... त्रि अवस्थाय अथि सन् । शिव०

श्वेत सुन्दर छुत भस्मा ... तनि प्रकटचोय सत्वोगुण
रुण्ड माला गल्य गंडमच ... रोप कोरमुत् इन्द्रियन
क्याह् छय जटा मुकट शोभान ... छल गुण्डमुत रजोगुण

टिकि शाय डचकि हिरि डिकि चंद्रम ... प्रकटयुय च्योन शुद्ध मन
दिक् वासन निर्वासन ... वास च्योन मन्य सुमनन
त्रिधाम छुक ज्ञान बुजतय ... त्रिकार रूप त्रिनयन । शिव०

माया तीत माया चान्य ... त्रिगुण साथि विकसन
निर्गुण छुक गुण उल्लङ्घित ... माया गुण विलसन
भूत भावत भूत पंचक ... देह् खर क्वर अहमन
दह् इन्द्रिय मन बुध ह्यथ ... प्राणबल सूत्य प्रचरण
सच्चिदानन्द रूप आत्मन् ... जीवभावसकुर शयन
तादात्म भाव देह् के लोभ ... प्राकृत बल जीवनन । शिव०

मोह् जाल सूत्य जीव गण्डनै ... आव कर्मनिन बंधनन
काम क्रूधन स्थित रटनस ... प्यठ भनस बुज त इन्द्रयण
द्वन्द्वभावत रागद्वेष साथि ... काप्य लुग् षट् शुत्रन्
गुण सङ्ग साथि ईत गछ्य् लुग ... पुण्य पापवश बांधज्ञन
मुक चारोक पाय चय शिव ... मोक्षदा छुक भक्तिन
भव बंधन मुकलावतम ... छुक चय भव ! भव भयहन् शिव०

निष्प्रपञ्च च्योन सोरूय प्रपञ्च वाञ्छ छम कस बर कन
हे हरे हर विरिञ्चि बोजतम ... क्याह वन पञ्च दैवतन
वन च क्याह कर, चंचल मन ... संसार क्यन् खेंचलन
पंचवदन मुकलावतम ... केंह उपाय छुम न च्यान्य व्यन
कून कून कून कुनोय तोषतम ... केंह अन्त छुन हेरि बुन
रूति मुख सुख मुख वरतम ... मुख सुन्दर दुःख हन् । शिव०

सम दितम सन्पदा यव ... सुम रुजहा समयन
सम यस गछ्य चान्य दया ... लग्य सुम स्यज कर्मन्
सम्य सोमरस अथ गुण किनि ... समयन तय साधनन्

सुम आहार सुम विहार ... सम निद्रा त जागरण
सभालीथ पानस सुम ... सुम शुजरिथ शायहन
लग्य समाध योग सम स्यज ... विजि सत् गुरु वचनन् । शिव०

भक्तिन प्रिय भक्ति दायक ... दय युस इच्छहन भक्ति जन
भक्ति भावत भक्ति भावनाय ... च्यय कुन लग्य निशि दिन
भक्ति वत्सल भक्ति छलबल ... बल फिरि गुड विषयन
दरि श्रद्धाय ध्यान धारीथ, ... रटि प्राग बुद्ध चित्त् त मन
यम नियम शम दम सम्य मन ... सुरि सुय दय क्षरा क्षरा
मन जीनिथ पुज चीनिथ ... गछि जीनिथ भवनन । शिव०

यस संस्रति पोत अच्य मन, ... सुस्त आस्यितन विभवन
लोर आस्यन अन्न धन्नत्, ... घर बारन त सन्तनन
व्यवहार च्यन काम्यन प्यठ, ... परद्यन हंज्य काम्य जन
प्रारब्धुक भोग भोगान्, ... भोगवुन जन स्वप्नन
रागीजन सार्य सूम सूत्य, ... त्यागो सर्त्रे कामनन
गच्छि संसार सर तरीथ, ... लड करान सूह जन । शिव०

युदवे कांसि ओरैय यियि भग ... संग मेल्यस साधुजन
साधुजन युस सम्य चित तय ... ममताय निशि आसि भिन्न
म्युन्न रूत क्रुत द्वन्द्व भावन ... छ्यन दित सर्त्रे कांमनन
शम दम ज्ञान विज्ञान सुस्त ... रुस्त कपटन त कल्पनन
ब्रह्मतत्पर आस्य आसयस ... परेहट सर्व विषयन
बुड दुर्लभ ब्रह्म रूप त्युथ ... लभ्य जीव ह्योह साधुजन । शिव०

युस कांह यछि पानस रुत ... क्रुत त्रावि प्रावि शुद्ध मन
शुद्ध मन भक्ति भावतगुण ... कन थाव्य साधु वचनन
साधु वचनव प्राव्य जाग्रत ... जाग्य जाग ह्यथ समयन

समय वातयस शम यम नियम पानै तार्य तस मुचरन
दींन दयाल हे कृपाल कांसि गथ छयन चानि व्यन
सत् भाव छम सथ चानी सत् गथ दिमभगवन । शि०

त्यल्य च्योनुम भुजि क्याह छुस यलि वाचम चेनवन
चेनन आयम दया चानी चेननावान सेवकन
भक्त युदवय मुक्त थावहम मुक्त छुस निष्यबन्धनन
सुप्रकाशत अविनाशि माशवीथ ज्यन मरणन ।
सत चित्त् आनन्द रूपस स्थिथ न्यिथ ह्यथ निगुण गण
पज दया चानि सारिय करि क्याह म्यानि वन वन । शिव०

शांत निर्मल आंत छुयम चानि मानतम सार वन वन
अख शुभ द्रष्टि शिव करतम नाव च्योन शुभ अशुभन
शुभदायक शुभ द्रष्टि चानि सार शोभा शोभनस्
शोभवुन चय त्रिण लोकन शोभ्रहथ पोषवर्षणन
शोभरावतम ज्ञान संपदा शोभ यच्छ ययी जगतन
शोभ सारूय चानि दया चानि कृपा भगवन् । शिव०

अविनाश बढ आश पूर्तम नाश करहा कल्पनन
आशा पूर आशा चानि आश छय राश पपनन
गटि हंदि घाश चित् प्रकाश घाश अनतम नित्रन्
माशविथ रोज सर्व कल्पनन नाशिविथ सर्व वासनन
प्रकाश शान्त प्रकाश चय घाशर घाश घाशरन्
परू प्रसाद गुरु प्रसाद करू प्रसाद भगवन । शिव०

संसार चीय. छुच आशा शुर्य मुर्य ताय सन्तनन
भाय बन्ध तय धन संपत् घर बार तय स्त्रीजन
सोरुय असोर भ्रम सोरूय मृगतृष्णा युथजन

शिव चय म्योन शूर्य मुर्य तय भाय बंध तय सारीजन
चय मोल माज्य चय घरबार चय संपत् द्यार धन
चय सोरोय चय साय सहा रोजतम भगवन् । शिव०

लोभ छुम न सुरगण हुन्द क्षोभ तिन भिय नरकुन
रुत करुत सुख दुःख भोगान फल पनन्यन् कर्मन्
हर नाव साथि थर अचान दूरि दूरि यम किंकरण
शिवभक्त संज सहाय छांडान माय पनन्यन देवगण
अख शुभ दृष्ट शिव छ्य्म चानि लख विभवन त स्वर्गन
सुय शुभ दृष्ट शिव करतम पानै वरतम भगवन् । शिव०

नव नाथेश्वर चय छुक नव निधान छुक सेवकन
नव्य खुत नुव नुव बु वुछहथ लगि नुव नुव नवनन
नव गंडिथ नव रटीथ नव प्रणव व्याहरण
नव दक्षपाल ह्यथ रोजतम ईश निश रुस्त विध्नन
नवदुर्गा करि (रक्षाल) पक्ष म्यून युस रक्षक शरणन्
नव द्वार पुर खस वोफ ह्यथ तधनीय शिव भवनन् । शिव०

(शुभ भवतु लेखक पाठकयोः)

★ ★ ★

(१७) योग लीला

दुर्गा प्रकट दर्शुन म्य दिये, सुख सम्पति मुक्ति म्य दिये

ओमकार के आकार साथी, ज्ञान नित्र क्यव प्रकाश साथी
साकार रूप दर्शुन दिये । सुख लम्पति० ।।१।।
मन रटिथ कन थाव शबदन, लीन कर मन वीदचन श्रुतियन ।
म्न नागस प्रेम पोनि वुजे । सुख० ।।२।।
शुनि जान यि संसार सोरूयि, माया ज्ञान घरकुय छु तोरुय ।
वैरागि साथि तोर मुचरन यिये । सुख० ।।३।।
भ्रम जान यि असार संसार, सम दृष्टि कर न्यबरुम व्यवहार ।
प्यठ ब्रह्माण्डस ह्य प्राण खारनियें । सुख० ।।४।।
मूलाधारुक ध्यान पूर धारिथ, साथि कुण्डलिनी ति फिर नाविथ ।
मेघ अजुन शब्द अति गच्छुवुनये । सुख० ।।५।।
यहोय अजुन पूर पाठि बूजिथ, वैखरी अति पूर पाठि नीरिथ ।
गायन अति प्रकट बोज वुनये । सुख० ।।६।।
गायत्री ब्ययि पान सरस्वती, कुण्डलिनी मंज उतपन सपदिथ ।
पूर अनुग्रह छु अति बनु वुनये । सुख० ।।७।।
कुण्डलिनी प्यठ ह्योर छु वातुनये, स्वदिष्ठस्थान तथ छि वन वनिये ।
प्रजलवुन सिर्य अति आस वुनये सुख० । ।।८।।
अति ह्योर मणि पूर्ण स्थान छु वातुनये,
त्रिकून रक्तवर्ण अति आसवुनये ।
(रं) शब्द तथ मंज आस वुनये । सुख० ।।९।।
चुतुर भुज अग्नि देव अति आसवुनये,
मेघ साथि वोलमुत अति ठहर वुनये ।
कवच्छि अमि संजि रुद्र आस वुनये । सुख० ।।१०।।
जगत नाशस यहोय करवनुये, सिंदूर वर्ण अमिस आसवुनये ।

व्यघ्रचर्म आसन धार वुनये । सुख० ॥११॥
यिज अथ छु धार वुनये, वर अभय साथि शूभुवुनये ।
त्रिनिथर धारिथ शूभुनये । सुख० ॥१२॥
अमिस क्वच्छि मंज शक्ती आस वनिये, लाकिनी तस नाव आसवतुये
चुतुर्भुज सिन्दूर वर्ण तस आस वनये । सुख ॥१३॥
अमि पध्मुक ध्यान करन साथी सुख सम्पतिछि मेलवनिये ।
निरंरोग यूगी बन वुनये । सुख० ॥१४॥
मणि पूर्ण चक्र युस छु आसवुनये (स्वः) लोक थत वनवनिये ।
सुय स्वः स्वर्ग आसवुनये । सुख० ॥१५॥
मणि पूर्ण पम्पोश अति आसवुनुये, स्वर्गस यूगी वातुवुनये ।
देवी देवता अति वुछवनये । सुख० ॥१६॥
यूगियस अति ज्ञान यिवुवुनये, देवतहान साथि कथ कर वनये ।
स्वर्गस मंज छु फेरवुनये सुख० । ॥१७॥
यूगियस युदवय मन अति डले, बोन अति प्यठ वसिथ पिये ।
मृत्यु लोककि दुख भूगनि ह्यये । सुख० ॥१८॥
यूग भ्रष्ट अथि छि वनवनिये, मृत्युलूकस जन्म ह्यववुनुये,
ब्ययि जन्मस प्यवान यिनुये । सुख० ॥१६॥
यिम देवता अति छि आसवनिये, तिमनति मुक्ति छन मेलवनिये
मृत्यु लूकस तिमति यिववनिये । सुख० ॥२०॥
मुक्ति प्राप्ति निमित योर यिववनिये, साधना तिम यति कर वनिये,
अद मुक्ती तिम छि प्राववनिये । सुख० ॥२१॥
अनाहत चक्रस प्यठ वातिथये, युदवय यूगी शरीर त्यागे ।
मृत्यु लोकस तसपिवान युनुये सुख० । ॥२२॥
अमि पत अनाहद चक्र आस वुनये, द्वादश दल अति आसवुनये ।
कुन्द पम्पोश रंग अथ आसवुनये । सुख० ॥२३॥
पध्म पत्रन सिंदूर रंग आसवुनये, वह शत्रु अति वास कर वनिये,

तृष्णा ममता अहंकारादि तथ प्यठ रोजवनिये । सुख० ।।२४।।

धूम्र वर्ण वायु बीज अति आसवुनये,
(यं) शब्द तथछि वन वनियें ।
चतुर्भुज वायु मण्डल अति आसवुनये, । सुख० ।।२५।।

हिर्णस प्यठ सवार आस वुनये,
राकिनी क्वछि मंज धार वुनये ।
पीत वर्ण शक्ती छस आसवनिये । सुख० ।।२६।।

त्रिनिथर धांरिथ आसवनिये, आभूषणव साथि शूभ वनिये ।
मुण्डमाला छि धारवनियें । सुख ।।२७।।

शिवत् जोवात्मा अति आसवनियें,
कोटि सिर्यन हुन्द प्रकाश दिव वनियें ।
स्वर्ण रंग भानु लिङ्ग आस बनियें । सुख० ।।२८।।

अति वायु मण्डलस शिव आसवुनयें,
चन्द्रम डचकस प्यठ धार वुनयें,
श्वेत्, तेज, सूक्ष्म, आसवनयें,
दीपककि पाठि प्रजल वनयें । सुख० ।।२९।।

यहोय ज्यूती जीवात्मा आसवनयें,
निर्मल प्रकाश साथि शूभु वनुयें.
वीजाक्षर अथ ज्योती आसवनियें । सुख० ।।३०।।

संसारुक्य सुख दुख युस आस वनयें,
सोरुय यहोय भूगुनवुये
संसार व्यवहार यहोय कर वनुये । सुख० ।।३१।।

अनाहत पघ्मस मंज यहोय जीवात्मा,
ईश्वर चिंतन कर वनुवुये,
अहो रात्र भजन कर वनयें । सुख० ।।३२।।

हंसः शब्द युस आसवनयें, सोहं उच्चारंस मंज यिववनयें ।
अहोरात्र जीवात्मा यहोय परवुनयें । सुख ।।३३।।

अनाहत शब्दुक ध्यान करन साथी अष्ट सिद्धी छस यिववनियॆ ।
सर्व सिद्धी छस दिव वनियॆ । सुख० ॥३४॥
कण्ठस मंज षोडश दल आसवनुयॆ. धूम्र वर्ण साथि शूभवनयॆ
नील वर्ण अथ आस वनुयॆ । सुख० ॥३५॥
विष अमृतादि छ यिधारवनुयॆ,
ब्युन ब्युन गुणव साथि शूभ वनयॆ ।
श्वेत वर्ण चन्द्रम अति आस वनयॆ । सुख० ॥३६॥
(हं) बीज चन्द्रमस आसवनयॆ,
पध्मस प्यठ यिछु शूभ वनयॆ,
प्रकाश साथि यिछ शूभ वनयॆ । सुख० ॥३७॥
सफेद हस्तिस प्यठ आकाश देवता आस वनयॆ,
प्रकाश साथि छुयि शूभ वनयॆ ।
अति सदा शिव पान आस वनयॆ । सुख० ॥३८॥
पंच मुख दश भुज आसवनुयॆ.
सत असत यहोय वन वनवुनयॆ ।
व्याघ्र चर्म धारिथ आसवनयॆ । सुख० ॥३९॥
युस आज्ञा चक्र आसवुनयॆ, तथ ज्ञान पध्म वन वनियॆ
अधिष्ठाता पर्मात्मा आसवनयॆ । सुख० ॥४०॥
यच्छा अमिसंज शक्ती आसवनिये,
महा प्रकाशमान आसवनियॆ ।
प्रजलवनि ज्योती हुन्द दर्शुनु अति बनवुनयॆ । सुख० ॥४१॥
यि छु रक्त वर्ण आस वनय,
ताल मूलस तल शूभुवनयॆ ।
अमृत कलश अति आसवुनयॆ । सुख० ॥४२॥
अम्युक ध्यान करन साथी,
सर्व रूगन नाश गच्छवनयॆ ।
निर रूग यूगी बनु वुनयॆ । सुख० ॥४२॥

हे सुशीला छख़ च ऋष बाला
म्यानि हृदयच छख़ च जप माला
मनि मंज म्य चोन नाव आसवुनये । सुख़० ॥४३॥

मुख़ पूर्ण सिर्य चोन चमकान ।
तन निर्मल युथ चन्दरम प्रजलान
अख़ शुभ द्रष्टि करतम म्य चये । सुख़० ॥४४॥

त्यागी अनाथ गुलि गण्डिथ वनान,
म्यति पूर्ण यूगी बनाव ।
आवागमन पाश चठ वोनि चये । सुख० ॥४५॥

– विज्ञापन –

पूर्व काल से ही इस देश में वत्सर के तीन भाग माने जाते है। पहला – चेत, वैशाक, जिष्ट, आषाड महीनों का – जब धान्य और साद्य पदार्थों की उत्पति होती है। यह काल ब्रह्माजी (सृष्टि कर्ता) का समझा जाता था ।

दूसरा—सावन, बहादून, अश्विज और कार्तिक मासों का जब खाद्य पदार्थ पक्क जाते हैं और कुछ पक्के मिलते हैं । यह समय भगवान विष्णु (पालन पोशण कर्ता) का माना जाता था ।

तीसरा – मघर पोष माघ फाल्गुण महीनों का – जब पदार्थो का अंकुरिन होना बन्द होता है। यह समय भगवान रुद्र (सम्हार कर्ता) का गिना जाता था ॥

श्री महा लक्ष्मी जी का व्रत जैसा पुराण में वर्णित है उन के पति भगवान विष्णु के समय यानी वत्सर के दूसरे भाग में, बहादून के शुक्ल पक्ष में किसी शुभ दिन पर यहां करते आये हैं इस वक्त पूजा में लगने वाली सब सामयिक सामग्री जैसे कमल, ताजा कपास फलमूल आदि मिलते हैं। श्री देवी को प्रसन्नता के लिये डोरा (सूत्र) जिस की पूजा इस व्रत में का जाती है ताजा (नये साल के) कपास से किसी कुमारी से कतवा कर बनाया जाने की रीति थी — अब भी किसी २ जगह ऐसी रीति हैं किन्तु अब नारवन को ही प्रचुर प्रचार में लाया जाता है। सूत्र को कश्मीरी भाषा में पन्न कहते हैं। अतः इस व्रत को यहां पन्न देने का व्रत भी कहते हैं ॥

★ ★ ★

ॐ श्री गणेशाय नमः

पद्मासनस्थाम् करपङ्कजाभ्यां रक्तोत्पले सन्दधतीं त्रिनेत्राम् ।
सम्बिभ्रतीमाभरणानि रक्तां पद्मावतीं पद्ममुखीं नमामि ॥

अर्थः कमलासन पर बैठी हुई, करकमलों से लाल, कमल को धारण करने वाली, तीन नेत्रों वाली भूषणों को धारण करती हुई लाल वर्ण श्री महालक्ष्मी, कमल मुखी को नमस्कार करता (या करती) हूं ॥

ॐ राजा युधिष्ठिर बोले :- हे परम पुरुष श्री कृष्ण जी। मनोवांछित फल का देने वाला कोई व्रत विचार करके मुझे कहिये। श्री कृष्ण जी बोले- हे युधिष्ठर ! पहले कृतयुग

में जब इंद्र बृत्रासुर से हार गया था – तब उसने नारद जी से यही प्रश्न पूछा था । तब नारदजी कहने लगे और जो वह कह गये वही मैं तुम्हें कहता हुं ।

नारदजी बोले :- हे इन्द्र ! पूर्व काल में एक रमणीय नगर था उस का राजा मंगल नाम वाला, मानो साक्षात् मंगलों का गृह हीं था । उस कीं दो रानियां थी – चिल्ल देवी और चोल देवी । चिल्ल देवी दुर्भगा थी – राजा उस से प्यार नहीं करता था । चोलदेवी महा यशस्विनी थी, तथा पट्टरानी थी । उस से राजा बहुत प्यार करता था । एक दिन मंगल राजा चोल देवी के साथ महल के शिखर पर बैठा था वहां से उस की नज़र में एक जगह आ गयीं जो बडी सुन्दर थी । उस को देख के प्रीति के कारण हास्य युक्त मुख से वह राजा चोल देवी से कहने लगा । हे चंचलाक्षि (चञ्चल नेत्रों वाली) मैं तुम्हारे लिए वहां पर एक सुन्दर बाग बनवा दूंगा जो नंदनवन को भी निंदित करें । चोल देवी के अनुमोदन करने पर उस जगह पर बाग बनवाया गया वह बाग नाना लताओं और फलफूल बृक्षों से संपन्न हो गया । एक समय उस बाग में दुर्दैव से एक सूकर (कोलासुर) आ गया जो भयानक आकृति का था । उस काल के समान सूकर ने सारे बाग को नष्टभ्रष्ट कर दिया और कई रक्षा करने वालों को मार डाला । जो बच गये थे वह राजा के पास गये और उस को सब वृत्तांत सुनाया । राजा की आंखें लाल हो गईं और उसी समय भारी सेना लेकर बाग की ओर निकला । बाग को देख कर उसने अच्छी तरह से उस को घेरवा लिया और अपनी सेना

से बोला कि जिस किसी रास्ते से यह सूकर अगर निकल गया तो जो सिपाही वहां पहरे पर होगा उस के प्रमाद की सज़ा उस का सिर तलवार से वैसे काटा जाएगा, जैसे शत्रु का सिर काटते हैं। अकस्मात जिस रास्ते में राजा खडा था उसी रास्ते से यह सूकर निकल भागा। राजा लज्जित हुआ और उसी रास्ते से सूकर के पीछे घोडे को कोडे मारता हुआ दौडा 1 एक वन में पहुचा। वह महा घोर जंगल था। नाना लताओं से से युक्त था। भयानक जगली जानवरों से युक्त था। राजा सूकर की खोज में घूमता था कि इतने मे सूकर उसके सामने आ गया। राजा ने झट बाण से उसको गिरा दिया। सूकर ने सूकर के शरीर को छोडकर मदन के समान दूसरा सुन्दर शरीर धारण किया। तब दिव्य विमान में बैठा हुआ वह मंगल राजा से कहने लगा – हे महीपाल। तुम्हारा कल्याण हो, तुम ने मुझे सूकर योनि से मुक्त किया। मैं पूर्व जन्म में गंधर्व था। गाने बजाने में बडा चतुर था। एक समय ब्रह्मसभा में गाते गाते जरा स्थान से भ्रष्ट हो गया इसी कारण ब्रह्माजी ने मुझे चित्ररथ गन्धर्व को शाप दिया कि तू पृथ्वी पर सूकर हो जा और जब तुमको मंगल राजा मारेगा तब तुम्हें सूकर योनि से मुक्ति होगी। वह सब आज आपके प्रसाद से हो गया। मैं बडा सन्तुष्ट हूआ हूं आपको एक दुर्लभ वर देता हुं कि एक महा लक्ष्मी व्रत है जो धर्म अर्थ, काम मोक्ष देनेवाला है तुम को प्राप्त हो। ऐसा कहकर वह गन्धर्व अन्तर्हित हो गया। इस के अनन्तर राजा ने सामने एक ब्राह्मन बटु को देखा। उस से पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आये हो। बटु ने

आशीर्वाद देकर कहा कि मैं आप के देश में पैदा हुआ हूं और आपके साथ ही यहां आया हूं यदि कुछ मेरे लिये काम हो तो मुझ से कहिये । राजा को बहुत प्यास लगी थी और बडा थका हुआ था । उस ने बटु से कहा कि कहीं जलाशय हो तो देख के मेरे लिये थोडा सा जल ले आयो । बटु राजा को "अच्छा" कह कर उस को वठ वृक्ष के नीचे विश्रांति लेने के लिये कह कर उसी के घोडे पर चढ कर जिस दिशा में पंक्षीं शब्द कर रहे थे उसी दिशा की ओर चला और एक सुन्दर तालाब पर पहुँचा । वह तालाब बडा सुन्दर था मानो नारायण स्वरूप ही था । वह जल लाने के वास्ते किनारे पर गया वहां उसका घोडा कीचड में धंस गया । तब वह बटु घोडे पर से उतर कर चारों ओर देख के उस तालाव के दूसरे किनारे पर गया । वहां पर उस ने एक स्त्रियों का समूह देखा जो दिव्य कथा कहती थीं । वह बटु उन के पास जा कर, अपना वृत्तान्त इन से कह कर, पूछने लगा कि आप यह क्या कर रही हो । तो उन स्त्रियों ने कहा कि त्रैलोक्य में जो माया, प्रकृति, या शक्ति है उसी महालक्ष्मी का यह व्रत कर रही हैं विधान और फल इसका पूछने पर उन्हों ने कहा कि इस व्रत का आरभ भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन किया जाता है सवेरे स्नान आदि शोच कर्म करके व्रती पूजास्थान पर आ कर सोलह तंतुओं से तथा सोलह ग्रंथियों से युक्त एक दोरा (नारिवन जैसा) बनावे उस की पूजा करे और "लक्ष्म्यै नमः" इस मन्त्र से सब ग्रंथियों को अभिमंत्रित करे और दहिने हाथ में बांधे । अक्षतों और सोलह कांडों से पहले दोरे की पूजा करे । व्रत की समाप्ति कृष्ण पक्ष की

अष्टमी (आश्वयुज महालक्ष्मी) के दिन करे। उस दिन पूजा-स्थान पर आकर आठ पत्र वाली श्वेत पत्र युक्त कमल लिखे और उस की कर्णिका पर महालक्ष्मी की मूर्त्ति भी लिखे और एकाग्रचित हो कर उनका ध्यान और पूजन प्रार्थना आदि करें (यहां पर जो रीति प्रचलित है उसी के अनुसार पूजन होगा। घडे मैं पानी सरोवर का चिन्ह है और उस में कमल रख कर उस पर महा लक्ष्मी की मूर्त्ति या चित्र रख कर पूजा की जाती है) स्त्रियों ने विधान फल आदि विस्तार पूर्वक बटु से कहा और उसको यह व्रत करने को कहां। वह बटु फिर घोडे को पानी पिला कर और आप भी पीकर राजा के वास्ते भी लाकर तुरन्त राजा के पास आया और उसको सारा वृतान्त सुनाया। राजा ने वहां हीं यह व्रत संक्षेप में किया और उसके प्रभाव से ठीक रास्ते पर लग कर वहां से अपने नगर में पहुंचा। पौरजनों ने तौर्य आदि बाजों से युक्त बडा उत्सव किया। राजा अपने मन्दिर के पास गया और बैठ के सारा वृतान्त (वन की वार्ता) सुना रहा था। इतने मैं चाल देवी आयी और उसने राजा के बाहु में बंधे हुए दोरे को देखा और शंका करने लगी कि यह राजा शिकार के बहाने से किसी दूसरी स्त्री के पास गया होगा और उसी स्त्री ने अपने सौभाग्य के अर्थ राजा के वाहु मैं यह डोरा (दोरा) बांधा होगा। राजा मन्त्रियों से वन की वार्ता सुनाने में तन्मय था चोल देवीं ने चुपके से डोरा तोडा और दूर जमीन पर फेंक दिया। उस समय चिलदेवी की एक दासी भी वहां पर राजा को देखने के लिये आई थी उस ने डोरे को उठा लिया और बटु से सब वृतान्त पूच्छा

और वह वृत्तान्त अपनी स्वामिनी के पास जाकर कहा। एक संवत्सर बीतगया तब श्रीलक्ष्मी की पूजा के दिन चिल्ल देवी के मन्दिर में यह व्रत आरम्भ हुआ। जब राजा ने बाजे आदि के शब्द सुने तो उसने बटु से जो अब मन्त्री के पद पर नियुक्त था पूछा कि यह क्या वहां हो रहा है तो वटु से वार्ता सुन कर उस से पूछा कि अरे! वह मेरा डोरा कहां है। उस से डोरे के तोडने का हाल सुन कर राजा चोल देवी के ऊपर बडा क्रुद्ध हुआ और लक्ष्मी जी के पूजन के लिये चिल्लदेवी के गृह में गया। इतने में लक्ष्मी जी (भोब गरजमाज–देवी गरुड जी की माता) वृद्ध स्त्री का रूप धारण कर परीक्षा के लिये चोल देवी के गृह में आई–वहां चोल देवी उससे कहने लगी, हे दुष्टे! तू यहां से चली जा मेरे गृह में आने से क्या है? ऐसे अवमानित हो कर लक्ष्मी जी ने उसे शाप दिया कि तू ने मेरा अनादर किया है इस लिये तू शूकरमुखी हो जा तदंतर महा लक्ष्मी जी वृद्ध स्त्री रूप में चिल्ल देवी के गृह में आई। जहां पूजा हो रही थी बहुत प्रकार से संमान और पूजन स्वीकर करके उसने वृद्ध स्त्री रूप को छोड दिया और प्रत्यक्ष हुई तब चिल्लदेवी ने उस आज को पंचोपचार से पूजा की। श्री देवी पूजन से प्रसन्न हुई और रानी को वर मांगने को कहा। रानी बोली:-

हे सुरेश्वरी तुम्हारा यह व्रत जो करेंगे उनका गृह आप से कदापि न त्यागा जावे और आज से यह भूपकी कथा संसार में विख्यात् हो और हे देवी जी! मेरी भक्ति सदा आप में बनी रहे और सद्भाव से जो इस कथा को सुनेंगे उनको वांछित फल आपको सदैव देना चाहिये। "तथास्तु"

कह कर महालक्ष्मी जी वहां ही अन्तर्हित हो गई । उस समय दुराचारिणी चोल देवी चिल्लदेवी के गृह की ओर ईर्षासे आई परन्तु द्वारपालों से वारित होने से वह भागी और जंगल में अंगिरा ऋषि के आश्रम पर पहुंची। चोल देवी की अद्भुत आकृति देख के ज्ञान दृष्टि से विचार कर के उस मुनिनें रानी से महा लक्ष्मी जी का व्रत कराया। व्रत करने से रानी महा यशस्विनी तथा लावण्य का स्थान हो गई । फिर किसी समय राजा शिकार के लिये वन में आया तब उस ने उस मुनि के आश्रम में उस सुन्दर स्त्री को देखा । मुनि से पूछा कि यह धन्या स्त्री कौन है । मनि ने उसका सब हाल राजा को सुनाया और उस को राजा के हवाले किया। राजा चोलदेवी के साथ अपने राज्य में आ गया। चिल्ल देवी भी "चीलदेवी समागमम्" याने चोलदेवी जहां कहीं गयी है । वहां से लौट आये, ऐसा वर श्री देवी से मांगती रही थी। अब दोनों का समागम हुआ तब जैसे गंगा यमुना समुना समुद्र से सदा मिली रहती हैं वैसे हो मंगल राजा से वह स्त्रियां मिल गई । वह मंगल राजा दोनों स्त्रियों के साथ प्यारी पृथिवी को भोगता हुआ अन्त में आकाश में जाके विष्णु दैवत (श्रवण) नक्षत्र हुआ। नारद जी बोले हे इन्द्र ! यह व्रत सब व्रतों में उत्तम है सब तीर्थों में जैसे प्रयाग, देवों में जैसे भगवान, नदियों में जैसे गंगा । इस व्रत के करने से अवश्य वांछित फल की प्राप्ति होती है तुम इस व्रत को करो ॥ श्री कृष्ण जी युधिष्ठिर से बोले हे-युधिष्ठिर तुम भी इस व्रत को करो । इन्द्र ने इस व्रत को किया और वृतासुर के भय

से मुक्त हुआ तुम भी इस व्रत के करने से वांछित फल प्राप्त करोगे ।।

ओम् शान्ति: शान्ति: शान्ति: ।

श्री भविष्योत्तर पुराण में दी हुई कथा का संक्षिप्त अनुवाद समाप्त हुआ ।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयंकरि । सर्व पाप हरे देवि महा लक्ष्मि नमोस्तु ते ।।

देवी करे – जैसे इन दोनों रानियों के दिन समय पर फिरे वैसे ही सब दु:खियों के दिन देवी फिरें ।।

★ ★ ★

(१६) अथ सम्पूर्ण इन्द्राक्षी

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी स्तोत्र महा मंत्रस्य शची पुरन्दर ऋषि अनुष्टुप छन्द: श्री इन्द्राक्षी दूर्गा देवता लक्ष्मीर्बीजम् भुवनेश्वरी शक्ति: भवानीति कीलकम मम श्री इन्द्राक्षी प्रसाद सिद्धर्थे पाठे विनियोग: ।। अथ कर न्यास: – ॐ इन्द्रक्षींति अङ्गुष्ठाभ्यां नम: ।। महा लक्ष्मींति तर्जनीभ्यां नम: । महेश्वरीति मध्यमाभ्यां नम: । अम्बुजाक्षींति अनामिकाभ्यां नम: । कात्यायनींति कनिष्ठकाभ्यां नम: । कौमारीति करतल कर पृष्ठाभ्यां नम: ।। अथहृदयादि न्यास: – इन्द्रक्षींति हृदयाय नम: । महालक्ष्मींति शिरसे स्वाहा । महेश्वरीति शिखायै वौषठ । अम्बुजाक्षींति कवचाय हुँ । कात्यायनीति नेत्राभ्यां वौषठ । कौमारीत्यस्त्राय फट ।। प्राणायाम: ।।

॥ अथ ध्यानम् ॥

नेत्राभ्यां दशभिश्शतैः परि वृत्तामत्युग्र चर्मांबरां । हेमाभां महतीं विलम्बित शिखामामुक्त केशान्वितां । घण्टा मण्डित पाद पद्मयुगलां नागेंन्द्र कुम्भस्तिनीमिन्द्राक्षीं परिचिन्तयामि मनसा सर्वार्थं सिद्धि प्रदाम् ॥१॥

श्री इन्द्राक्षी नौमि युवती नाना लंकार भूषिताम् ।
प्रसन्न वदनां भोज्ञमप्सरो गरण सेविताम् ॥२॥

पीताम्बरां वज्रधरैक हस्तां नानाविधालंकररणां प्रसन्नां त्वामप्सरस्सेवित पाद पद्मामिन्द्राक्षीं वन्दे शिव धर्मंपत्नीम् ॥३॥

इन्द्रक्षीं द्विभुजां देवीं पीत वस्त्र द्वयान्विताम् ।
वामे हस्ते वज्रधरां दक्षरोन वरप्रदाम् ॥ ४ ॥

इन्द्रर्दिभिः सुरवैर्रवंन्ध्यां वन्दे शंकर वल्लभाम् ।
एवं ध्यात्वा महा देवीं जपेत्सर्वार्थ सिद्धये ॥५॥

सहस्त्रनेत्रां सूर्याभां नाना लङ्कार भूषिताम ।
प्रसत्र वदनां नित्यामप्सरोगण.सेविताम् ॥ ६ ॥

श्री दुर्गा सौभ्य वदनां पाशाङकुश धरांपराम् ।
त्रैलोक्य मोहिनीं देवींभवानीं प्रणमाम्यहम् ॥७॥

ॐ लंपृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि नमः । हं आकाशात्मने पुष्पं समर्पयामि नमः यं वाय्वा त्मने धूपं समर्पयाभि नमः रं अज्ञानात्मने रत्तदीपं समर्पयामिनमः । वं अमृतात्मने अमृतं महा नैवेध्यं निवेदयामि नमः । सं सर्वात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयानि नमः ॥

★ ★ ★

श्री इन्द्र उवाच

ॐ वज्रिणी पूर्वतः पातु चाग्नेयां परमेश्वरी । दण्डिनी दक्षिणे पातु नैऋत्यांपातु खड्गिनी । पश्चिमे पाशधारी च ध्वजस्था वायु दिङ्गमुखे । कौमोदकी तथोदीच्यां पात्वैशान्यां महेश्वरी । ऊर्ध्व देशे पद्मनीमामधस्तात्पातु वैष्णवी । एवं दश दिशो रक्षेत्सर्वदा भुवनेश्वरो ॥ शची पतये विद्महे, पाक-शासनाय धीमहि तन्नः इन्द्राक्षी प्रचोदयात् ।३। ॥१॥

उन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतै समुदाहृता । गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ॥ २ ॥ नित्यानन्दा निराहारा निष्कलायै नमोऽस्तुते । कात्यायनी महा देवी छिन्न घण्टा महा तपाः ॥२॥ सावित्री साच गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी । नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्ण पिंगला ॥३॥ अग्निज्वाला रौद्र मुखी काल रात्रिस्तपस्विनी । मेघ स्वाना सहस्त्राक्षी विकरांगी जडोदरी ॥ ४ ॥ महोदरी मुक्तकेशी घोर रूपा महा बला । अजिता भद्रदानन्ता रोग हर्त्री शिव प्रिया ॥ ५ ॥ शिव दूती करालीच प्रत्यक्ष परमेश्वरी । इन्द्राणी इन्द्र रूपा च इन्द्र शक्तिः परायणा ॥६॥ सदा संमोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी । एकाक्षरी परब्रह्मी स्थूल सूक्ष्म प्रेवर्धिनी ॥७॥ एकाक्षरी रक्तदन्ता रक्तमाल्यां बरा परा । महिषासुर हन्त्री च चामुण्डा खड्गधारिणी ॥८॥ वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी । श्रुति स्मृतिर्धितिर्मेधाविध्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥९॥ अनन्ता विजयाऽपर्णा मानस्तोकाऽपराजिता । भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिकाशिवा ॥१०॥ शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध शरीरिणी । ऐरावत गजारूढ़ा वज्रहस्ता वर प्रदा ॥ ११ ॥ भ्रामरी काञ्चि कामाक्षी क्वणन्मानिक्य नूपुरा । त्रिपर्द भस्म

ग्रहर्ना त्रिशिश रक्त लोचना ॥१२॥ नित्या सकल कल्याणी सर्वैश्वर्य प्रदायिनी । दाक्षायिनी पद्महस्ता भारती सर्वमङ्गला ॥१३॥ कल्याणी जननी दुर्गा सर्व दुर्ग विनाशिनी । इन्द्राक्षी सर्व भूतेशी सर्व रूपा मनोन्मनी ॥१४॥ महिषासुर हर्त्री च चामुण्डा सप्तमातृका । ऐन्द्री देवी सदा कालं शान्तिमाशु करोतुम मे ॥१५॥ महिष मस्तक नृत्य विनोदन स्फुटरण प्रणि नूपुर पादुका । जनन रक्षणमोक्ष विधायिनी जयतु शुम्भ निशुम्भ निषूदिनी ॥१॥ सर्व मंगल मांगले शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्येत्र्यम्बके देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥२॥ शिवा चं शिव रूपाच शिव भक्ति परायणा । मृत्यंजया महा माया सर्व रोग निवारिणी ॥३॥

या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या माहि षोन्मूलिनी । याधूम्रेक्षणचण्ड मुण्ड मथिनी यारक्तबीजाशनी ॥ शक्तिः शुम्भ निशुम्भ दैत्य दलिनी या सिद्ध लक्ष्मी परा । सा देवी नव कोटि–मूर्ति सहिता मां पातु माहेश्वरी ॥ जप्तं पाप हरं बलं नुत करं संपूजितं श्रीकरं ध्यातं मानकरं स्तुतं धन करं सम्भाषितं सिद्धदम् । गीतं सुन्दरि वाञ्छितं प्रतनुते ते पाद पद्मद्वयं । भक्तानां भवभीतिभञ्जन करं सिद्धचक्रदं पातुनः ॥ मायाकुण्डलिनी क्रियामधुमती काली कला मालिनी, मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी । शक्ति. शङ्कर वल्लभात्रिनयना वाग्वादिनी भैरवीह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता कुमारी त्यसि ॥

★ ★ ★

(२०) अथ शिवनिर्वाणस्तुतिः ॥ क्षमापनस्तुतिश्च ॥

जयत्यऽनन्यसामान्यप्रकृष्टगुणवैभवः । संसारनाटकारम्भनिर्वा–हनकविः शिवः । ॐनमः शिवाय भूतभव्यभाविभावभाविने । ॐनमःशिवाय मातृमानमेयकलनाजुषे । ॐनमः० भीमकान्त–शान्तशक्तिशालिने । ॐ० शाश्वताय शङ्कराय शम्भवे । ॐ० निर्निकेतनिःस्वभावमूर्त्तये । ॐ०निर्विकल्पनिष्प्रपञ्चसंविदे । ॐ० निर्विवादनिष्प्रमाणसिद्धये । ॐ० निर्मलाय निष्कलाय वेधसे । ॐ० पार्थिवाय गन्धमात्रसंविदे । ॐ० षड्साद्यसाम्यरस्यतृप्तये ॥१०॥ ॐ० तैजसाय रूपितानिरूपिणे । ॐ० पावनाय सर्व–भावसंस्पृशे । ॐ० नाभसाय शब्दमात्रराविणे । ॐ०निर्गलन्म–लव्यपायि पायवे । ॐ० विश्वसृष्टिसौष्ठवैकमेधसे । ॐ० सर्वतः प्रसारिपादसम्पदे । ॐ० विश्वभोग्यभोगयोग्यपाणये । ॐ०वाचक–प्रपञ्चवाच्यवाचिने । ॐ० नस्यगन्धसर्वगन्धबन्धवे । ॐ०पुद्गला-लिलोलकाग्रशालिने ॥२०॥ ॐ०चाक्षुषाय विश्वरूपसन्दृशे ॐ० तद्गु-णत्रयविभागभूतये । ॐ० पौरुषाय भोक्तृदाय मानिने । ॐ० सर्वतो नियन्तृतानियामिने । ॐ०कामभेदकल्पनोपकल्पिने । ॐ०-किञ्चदेव वत्सताकरासृजे । ॐ०किञ्चिदेव वेत्तृतोपपादिने । ॐ०सर्वभोग्यवर्धनोपरागिणे । ॐ० शुद्धविद्यतत्त्वमन्त्ररूपिणे । ॐ०दृक्त्वयाविकस्वरेशात्मने ॥३०॥ ॐ० सर्वविस्प्रभो सदाशिवाय ते । ॐ०वाच्यवाचकादिषड्कभित्तये । ओं० वर्णमंत्रसत्पदो–पपादिने । ॐ०पञ्चधा कलाप्रपञ्चपञ्चिने । ॐ०सौरजैनबौद्ध–शुद्धभागिने । ॐ० भक्तिमात्रलभ्यदर्शनाय ते । ॐ०सर्वतो गरीयसां गरीयसे । ॐ०सर्वतो महीयसां महीयसे । ॐ०सर्वतः स्थवीयसां स्थवीयसे । ॐ० तुभ्यमस्त्वणीयसा–मणीयसे ॥४०॥ ॐ०मन्दराद्रिकन्दराधिशायिने । ओं०जाह्नवी-

जलोज्ज्वलाभजूटिने । ॐ०भालचन्द्रचन्द्रिकाकिरीटिने । ॐ० सो-मसूर्यवह्निमात्रनेत्र ते। ॐ० कालकूटकण्ठपीठसुश्रिये । ॐ० धर्मरूप-पुङ्गवध्वजाय ते । ॐ० भस्मधूलिशालिने त्रिशूलिने । ॐ० सर्वलोकपालिने कपालिने । ॐ० सर्वदैत्यमर्दिने कपर्दिने। ॐ० नित्यनम्रनाकिने पिनाकिने ॥५०॥ ॐ० नागराजहारिणे विहारिणे । ॐ० शैलजाविलासिने सुखासिने । ॐ० मन्मथप्रमाथिने पुरप्लुषे । ॐ० कालदेहदाहयुक्तिकारिणे । ॐ० नागकृत्तिवाससेऽप्यऽवाससे । ॐ० भीषणश्मशानभूमिवासिने । ॐ० पीठशक्तिपीठकोपपादिने । ॐ० सिद्धमन्त्रयोगिने वियोगिने । ॐ०-सर्वदृक्चतुर्नयादिकारिणे । ॐ० सर्वतीर्थतीर्थताविधायिने ॥६०॥ ॐ० साङ्गवेदतद्विचारचारवे । ॐ० षट्पदार्थषोडशार्थवादिने । ॐ० सांख्ययोगपाञ्चिरात्रपञ्चने । ॐ० धातृविष्णुशर्वकादिरूपिणे । ॐ० धातृविष्णुप्रमुखात्मरूपिणे । ॐ० भोग्यदाय भोग्यभोगरूपिणे । ॐ पारगाय पारणाय मन्त्रिणे । ॐ०-पारमार्थपार्थिवस्वरूपिणे। ॐ० सर्वमण्डलाधिपत्यशालिने । ॐ०-सर्वशक्तिवासनानिवासिने ॥७०॥ ॐ० सर्वतन्त्रवासनारसात्मने । ॐ०सर्वमन्त्रदेवतानियोगिने । ॐ०स्वस्थिताय नित्यकर्ममालिने । ॐ०कालकल्पकल्पिने सुतल्पिने । ॐ० भक्तकाय सौख्यदाय शम्भवे । ॐ भूर्भुवःस्वरात्मलक्ष्यलक्षिणे । ॐ० शून्यभावशान्तरूपधारिणे । ओं०सर्वभावशुद्धबुद्धिहेतवे । ओं०सर्वसिद्धिदायिने सुमायिने । ओं० भक्तिमात्रसंस्तुताय शूलिने ॥८०॥ ओंनमः शिवाय भास्वते । ओं०भर्ग ते । ओं० शर्व ते । ओं० गर्व ते । ओं० खर्व ते । ओं० पर्व ते । ओं० रुद्र ते। ओं० भीम ते । ओं० विष्णवे । ओं० जिष्णवे ॥९०॥ ओं० धन्विने । ओं० खड्गिणे । ओं०चर्मिणे । ओं० वर्मिणे । ओं०कर्मिणे। ओंधर्मिणे । ओं० भामिने । ओं० कामिने । ओं० योगिने । ओं० भोगिने । ओं० तिष्ठते ।

ॐ० गच्छते । ॐ०हेतवे । ॐ०सेतवे । ॐ०सर्वतः । ॐ०सर्वशः । ॐ०सर्वदा । ॐ०सर्वथः १०८॥ भव शर्व रुद्रहर शंकर भूतपते गिरिश गिरीश भर्ग शशिशेखर नीलगल । त्रिनयन वामदेव गिरिजाधव माररिपो जयजय देवदेव भगवन्भवतेऽस्तु नमः ॥ एतामष्टोत्तरशतनमस्कारसंस्कारपूतां भूतार्थव्याहृतिनुति-मुदाहृत्य मृत्युञ्जयस्य । कश्चिद्विद्वान्यदिह कुशलं सञ्चिनोति स्म किञ्चित्तेनान्येषां भवति पठतामीप्सितार्थस्य सिद्धिः । इति व्यासोक्तनिर्वाणस्तुतिः ॥ अथ शिवापराधक्षमापनस्तुतिः ॥ ॐ-आदौ कर्मप्रसङ्गात्कलयति कलुषे मातृकुक्षौ स्थितं मां विण्मूत्रा-मेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः । यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति विविधं शक्यते केन वक्तुं क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो ॥१॥ बाल्ये दुःखाति-रेकान्मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासी नो शक्यश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनितैर्जन्तुभिः संप्रदष्टः । नानारोगादिदुःखाद्रुदनपरवशः शङ्कर न स्मरामि क्षन्तव्यो मेऽपराधः० ॥२॥ प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्धौ दष्टो नष्टो विवेकात्सुतधन-युवतिस्वादुसौख्ये निषण्णः शैवीचिन्ताविहीनः परतपनरतो मान-गर्वाधिरूढः क्षन्तव्यो मे० ॥३॥ वार्धक्ये चेन्द्रियाणां विनति-गतमतिश्चाधिदैवाधिभूतैर्दुःखै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिही-नोऽतिदीनः । मिथ्यामोहाभिलाषैर्भ्रमन्नऽलिगणवत् धूर्जटेर्ध्यानभ्रष्टः क्षन्तव्यो० ॥४॥ स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिकृते नाहृतं गाङ्गतोयं पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्खण्डबिल्वीदलानि । नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धपुष्पैस्त्वदर्थं क्षन्तव्यो० ॥५॥ स्थित्वा पद्मासनेहं प्रणवयुतमरुत्कुण्डलीसूक्ष्ममार्गाच्छान्ति नीते स्वस्वान्ते प्रकटितविभवं ज्योतिरूपं पराख्यम् । लिङ्गज्ञैर्ब्रह्मवाक्यैः सकलतनुगतं शङ्करं न स्मरामि क्षन्तव्यो

॥६॥ ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो हव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नार्पितंबीजमन्त्रैः । नो तप्तं गाङ्गतीरे व्रतजपनियमैरुद्रजाप्यैर्न वेदैः क्षन्तव्यो० ॥७॥ दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिङ्गं नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः । धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः क्षन्तव्यो० ॥८॥ नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनं प्रत्यभिज्ञातुमीषच्छ्रौतं वाक्यं कथं वा द्विजवरशमदं ब्रह्ममार्गप्रदीपम् । ज्ञेयो धर्मो विचारैः श्रवणमनु मया किं निदिध्यासितव्यं क्षन्तव्यो० ॥९॥ नग्नो निःसङ्गशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो नासाग्रे न्यस्तदृष्ट्या विदितभवगुणेनैव नेष्टः कदाचित् । उन्मत्तावस्थया त्वं विगतकलिमले स्वाशये नापि प्राप्तः क्षन्तव्यो० ॥१०॥ चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शंकरे सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे । दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ॥११॥ किंवाऽनेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं किंवा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम् । ज्ञात्वैतत् क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः स्वात्मस्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम् ॥१२॥ आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः । लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितं तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना ॥१३॥ आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः । सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥१॥ ब्रूषे नोत्तरमङ्ग पश्यसि न मामेतादृशं दुःखितं विज्ञप्ति बहुधा कृतां न शृणुषे नायासि

मन्मानसे । संसारार्णवगर्तमध्यपतितं प्रायेण नालम्बसे वाक्च-क्षुःश्रवणाद्रिन्द्रियगणरहितं त्वामाह सत्यं श्रुतिः ॥ २ ॥ कर-चरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽप-राधम् । विदितमविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ १४ ॥ इति शंकराचार्यकृता शिवापराध-क्षमापनस्तुतिः ॥ ॥ अथ रावणकृतदीनाक्रन्दाख्यशिवक्षमापणम् ॥ ॐगौरीश्वराय भुवनत्रयकारणाय भक्तप्रियाय भवभीतिभिदे भवाय । शर्वाय दुःखशमनाय वृषध्वजाय रुद्राय कालदहनाय नमः शिवाय ॥ १ ॥ सर्वेश्वरत्वे सति भस्मशायिने ह्युमापतित्वे सति चोर्ध्वरेतसे । वित्तेशभृत्ये सति चर्मवाससे निवृत्तरागाय नमस्तपस्विने ॥२॥ ॐकारेण विहीनस्य नित्यमुद्विग्नचेतसः । तापत्रयाग्नितप्तस्य त्राणं कुरु महेश्वर ॥३॥ कायपोषणसक्तस्य रोगशोकाकुलस्य च । भवार्णवनिमग्नस्य त्राणं० ॥ ४ ॥ मदनोरगदष्टस्य क्रोधाग्निज्वलितस्य च । लोभमोहादिसक्तस्य त्राणं० ॥ ५ ॥ तृष्णाश्रृङ्खलया नाथ बद्धस्य भवपञ्जरे । कृपार्द्रदीनचित्तस्य त्राणं० ॥ ६ ॥ भटैर्नानाविधैर्घोरैर्यमस्याज्ञा-विधायकैः । तां दिशं नीयमानस्य त्राणं० ॥ ७ ॥ दुष्टस्य नष्टचित्तस्य श्रेष्ठमार्गोज्झितस्य च । अनाथस्य जगन्नाथ त्राणं० ॥ ८ ॥ संसारपाशदृढबन्धनपीडितस्य मोहान्धकारविषमेषु निपातितस्य । कामार्दितस्य भयरागखलीकृतस्य दीनस्य मे कुरु दयां परलोकनाथ ॥ ९ ॥ दीनोस्मि मन्दधिषणोस्मि निराश्रयोस्मि दासोस्मि साधुजनतापरिवर्जितोस्मि । दुष्टास्मि दुर्भगतमोस्मि गतत्रपोस्मि धर्मोज्झितोस्मि विकलोस्मि कलङ्कि-तोस्मि ॥१०॥ भीतोस्मि भङ्गुरतमोस्मि भयानकोस्मि शंकाश-तव्यतिकराकुलचेतनोस्मि । रागादिदोषनिकरैर्मुखरीकृतोस्मि सत्यादिशौचनियमैः परिवर्जितोस्मि ॥ ११ ॥ जन्माटवीभ्रमणमा-

रुतखेदितोस्मिनित्यामयोस्म्यऽशरणोस्म्यऽसमञ्जसोस्मि । आशानिरङ्कुशपिशाचिकयार्दितोस्मि हास्योस्मि हा पशुपते शरणागतोस्मि ॥१२॥ हा हतोस्मि विनष्टोस्मि दष्टोस्मि चपलेन्द्रियैः । भवार्णवनिमग्नोस्मि किं त्रातुं मम नार्हसि ॥१३॥ यदि नास्मि महापापी यदि नास्मि भयातुरः । यदि नेन्द्रियसंसक्तस्तत्कोर्थः शरणे मम ॥१४॥ आर्तो मत्सदृशो नान्यस्त्वत्तो नान्यः कृपापरः । तुल्य एवावयोर्योगः कथं नाथ न पाहि माम् ॥ १५ ॥ आकर्णयाऽशु कृपणस्य वचांसि सम्यक् लब्धोसि नाथ बहुभिर्ननु जन्मवृन्दैः । अद्य प्रभो यदि दयां कुरुषे न मे त्वं त्वत्तः परं कथय कं शरणं व्रजामि ॥ १६ ॥ द्वेष्योहं सर्वजन्तूनां बन्धूनां च विशेषतः । सुहृद्वर्गस्य सर्वस्य किमन्यत्कथयामि ते ॥१७॥ मातापितृविहीनस्य दुःखशोकातुरस्य च । आशापाशनिबद्धस्य रागद्वेषयुतस्य च ॥१८॥ देवदेव जगन्नाथ शरणागतवत्सल । नान्यस्त्रातास्ति मे कश्चित्त्वदृते परमेश्वर ॥१९॥ भीतोस्मि कालवशगोस्मि निराश्रयोस्मि खिन्नोस्मि दुःखजलधौ पतितोस्मि शम्भो । आर्त्तोस्मि मोहपटलेन समावृतोस्मि त्वां चन्द्रचूड शरणं समुपागतोस्मि ॥२०॥ आशिखान्तं निमग्नोस्मि दुस्तरे भवकर्दमे । प्रसीद कृपया शम्भो पादाग्रेणोद्धरस्व माम् ॥२१॥ श्रुत्वा मे भवभीतस्य भगवन्करुणा गिरः । तथा कुरु यथा भूयो न बाधन्ते भवापदः ॥२२॥ समयशतविलुप्तं भक्तिहीनं कुचैलं मलिनवसनगात्रं निर्दयं पापशीलम् । रविजभ्रुकुटिभीतं रोगिणं प्राप्तदुःखं खलजनपरिभूतं रक्ष मां सर्वशक्ते ॥२३॥ आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा । भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम् ॥ २४ ॥ जातस्य जायमानस्य गर्भस्थस्यापि देहिनः । माभूत्तत्र कुले जन्म यत्र शम्भुर्न दैवतम् ॥२५॥ शङ्करस्य च ये भक्ताः शान्तास्तद्गतमानसाः । तेषां दासस्य दासोहं भूयां जन्मनि जन्मनि

॥ २६ ॥ नमस्कारादिसंयुक्तं शिवइत्यक्षरद्वयम् । जिह्वाग्रे वर्तते यस्य सफलं तस्य जीवितम् ॥ २७ ॥ यत्कृतं यत्करिष्यामि तत्सर्वं न मया कृतम् । त्वया कृतं तु फलभुक्त्वमेव परमेश्वर ॥२८॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भतम् । मया दासेन विज्ञप्तं क्षम्यतां परमेश्वर ॥२९॥ इति श्रीरावण-कृता दीनाक्रन्दनस्तुतिः ॥

★ ★ ★

(२१) बहुरूपगर्भस्तोत्रम् ।

शिवपूजायाम् ।

ॐ नमः स्वच्छन्दभैरवाय ॥ ब्रह्मादिकारणातीतं स्वशक्तया-नन्दनिर्भरम् । नमामि परमेशानं स्वच्छन्दं वीरनायकम् ॥१॥ कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम् । पप्रच्छ प्रणता देवी भैरवं विगतामयम् ॥२॥ "श्रीदेव्युवाच" प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु समयोल्लङ्घनेषु च । महाभयेषु घोरेषु तीव्रोपद्रवभूमिषु ॥३॥ च्छिद्रस्थानेषु सर्वेषु सदुपायं वद प्रभो । येनायासेन रहितो निर्दोषश्च भवेन्नरः ॥४॥ "श्रीभैरवः" शृणु देवि परं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम् । सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखनिवारणम् ॥५॥ प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु तीव्रेष्वऽपि विमोचनम् । सर्वच्छिद्रापहरणं सर्वार्तिविनिवारकम् ॥६॥ समयोल्लङ्घने घोरे जपादेव विमोचनम् । भोगमोक्षप्रदं देवि सर्वसिद्धिफलप्रदम् ॥७॥ शतजाप्येन शुद्ध्यंति महापातकिनोऽपि ये । तदऽर्धं पातकं हन्ति-तत्पादेनोपपातकम् ॥८॥ कायिकं वाचिकं चैव मानसं स्पर्शदोषजम् । प्रमादादिच्छया वाऽपि सकृज्जाप्येन शुद्ध्यति ॥९॥

यागारम्भे च यागान्ते पठितव्यं प्रयत्नतः । नित्ये नैमित्तिके काम्ये परस्याप्यात्मनोऽपि वा ॥१०॥ निश्छिद्रकरणं प्रोक्तं स्वभावपरिपूरणम् । द्रव्यहीने मन्त्रहीने यज्ञयोगविवर्जिते ॥११॥ भक्तिश्रद्धाविरहिते शुद्धिशून्ये विशेषतः । मनोविक्षेपदोषे च विलोपे पशुवीक्षिते ॥ १२ ॥ विधिहीने प्रमादे च जप्तव्यं सर्वकर्मसु । नाऽतः परतरो मन्त्रो नातः परतरा स्तुतिः ॥१३॥ नातः परतरा काचित्सम्यक्प्रत्यङ्गिरा प्रिये । इयं समयविद्यानां राजराजेश्वरीश्वरि ॥१४॥ परमाऽप्यायनं देवि भैरवस्य प्रकीर्तितम् । प्रीणनं सर्वदेवानां सर्वसौभाग्यवर्धनम् ॥१५॥ स्तवराजमिमं पुण्यं श्रृणुष्वाऽवहिता प्रिये ॥ १६ ॥ ("अस्य श्रीबहुरूपभट्टारकस्तोत्रस्य, श्रीवामदेव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीबहुरूपभट्टारको देवता, आत्मनो० चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ॥ न्यासं कृत्वा प्राणायामः ॥ ") वामे खेटकपाशशाङ्र्गविलसद्दण्डं च वीणाण्टिके बिभ्राणं ध्वजमुद्गरौ स्वनिभदे व्यङ्कं कुठारं करे । दक्षेस्यऽङ्कुशकन्दलेषुडमरून्वज्रत्रिशूलाभयान्त्रुद्रस्थं शरवत्क्रमिन्दुधवलं स्वच्छन्दनाथं स्तुमः ॥ ॐ वहुरूपाय विद्महे कोटराक्षाय धीमहि । तन्नोऽघोरः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ ("मूलं । अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च । सर्वथा शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः") १०८, ॐ श्रीभैरवः ॥ ॐनमः परमाकाशशायिने परमात्मने । शिवाय परसंशान्तनिरानन्दपदाय ते ॥१॥ अवाच्यायाऽप्रमेयाय प्रमात्रे विश्वहेतवे । महासामान्यरूपाय सत्तामात्रैकरूपिणे ॥२॥ घोषादिदशधाशब्दबीजभूताय शम्भवे । नमः शान्तोग्रघोरादिमन्त्रसन्दर्भगर्भिणे ॥ ३ ॥ रेवतीसङ्गविस्रम्भसमाश्लेषविलासिने । नमः समरसास्वादपरानन्दोपभोगिने ॥ ४ ॥ भोगपाशे नमस्तुभ्य योगीशैः पूजितात्मने । द्वयनिर्दलनोद्योगसमुल्लासि-

तमूर्तये ॥ ५ ॥ सत्त्वप्रसरविक्षोभविसृष्टाऽखिलजन्तवे । नमो मायास्वरूपाय स्थाणवे परमेष्ठिने ॥ ६ ॥ घोरसंसारसंभोगदायिने स्थितिकारिणे ॥ कालादिक्षितिपर्यन्तपालिने विभवे नमः ॥ ७ ॥ रेहनाय महामोहध्वान्तविध्वंसहेतवे । हृदयाम्भोजसंकोचभेदिने शिवभानवे ॥ ८ ॥ भोगमोक्षफलप्राप्तिहेतुयोगविधायिने । नमः परमनिर्वाणदायिने चन्द्रमौलये ॥ ९ ॥ घोष्याय सर्वमन्त्राणां सर्ववाङ्मयमूर्तये । नमः शर्वाय सर्वाय सर्वपाशापहारिणे ॥ १० ॥ रवणाय रवान्ताय नमस्ते रावराविणे । नित्याय सुप्रबुद्धाय सर्वान्तरतमाय ते ॥११॥ घोषाय परनादान्तश्चराय खचराय ते । नमो वाक्पतये तुभ्य भवाय भवभेदिने ॥ १२ ॥ रमणाय रतीशाङ्गदाहिने चित्रकर्मिणे । नमः शैलसुताभर्त्रे विश्वकर्त्रे महात्मने ॥ १३ ॥ नमः पारप्रतिष्ठाय सर्वान्तपदगाय ते । नमः समस्ततत्त्वाध्वव्यापिने चित्स्वरूपिणे ॥१४॥ रेवद्रराय रुद्राय नमस्ते रूपरूपिणे । परापरपरिस्पन्दमन्दिराय नमो नमः ॥ १५ ॥ भरिताखिलविश्वाय योगगम्याय योगिने । नमः सर्वेश्वरेशाय महाहंसाय शम्भवे ॥ १६ ॥ चर्च्याय चर्चनीयाय चर्चकाय चराय ते । रवीन्दुसन्धिसंस्थाय महाचक्रेश ते नमः ॥ १७ ॥ सर्वानुस्यूतरूपाय सर्वाच्छादकशक्तये । सर्वभक्षाय सर्वाय तमस्ते सर्ववेदिने ॥ १८ ॥ रम्याय वल्लभाक्रान्तदेहार्धाय विनोदिने । नमः प्रपन्नदुष्प्राप्यसौभाग्यफलदायिने ॥ १९ ॥ तन्महेशाय तत्त्वार्थवेदिने भववेदिने । महाभैरवनाथाय भक्तिगम्याय ते नमः ॥ २० ॥ शक्तिगर्भप्रबोधाय शरण्यायाऽशरीरिणे । शान्तिपुष्ट्यादिसाध्यार्थसाधकाय नमोऽस्तु ते ॥ २१ ॥ रवत्कुण्डलिनीगर्भप्रबोधप्राप्तशक्तये । उत्स्फोटनापटुप्रौढपरमाक्षरमूर्तये ॥ २२ ॥ समस्तव्यस्तसंग्रस्तरश्मिजालोदरात्मने । नम-

स्तुभ्यं महामीनरूपिणे विश्वगर्भिणे ॥ २३ ॥ रेवारणिसमुद्भूत-वह्निज्वालावभासिने । घनीभूतविकल्पात्मविश्वबन्धविभेदिने ॥ २४ ॥ भोगिनीस्यन्दनारूढिपौढिमालब्धगर्विणे । नमस्ते सर्वभक्ष्याय परमामृतलाभिने ॥ २५ ॥ णफकोटिसमावेश-भरिताखिलसृष्टये । नमः शक्तिशरीराय कोटिद्वितयसङ्गिने ॥२६॥ महामोहमलाक्रान्तजीववर्गप्रबोधिने । महेश्वराय जगतां नमः कारणबन्धवे ॥ २७ ॥ स्तेनोन्मूलनदक्षैकस्मृतये विश्वमूर्तये । नमस्तेस्तु महादेवनाम्ने परस्वधात्मने ॥२८॥ रुद्राविणे महा-वीर्यरुरुवंशविनाशिने । रुद्राय द्राविताशेषबन्धनाय नमोनमः ॥२९॥ द्रवत्पररसास्वादचर्वणोद्युक्तशक्तये । नमस्त्रिदशपूज्याय सर्व-कारणहेतवे ॥३०॥ रूपातीत नमस्तुभ्यं नमस्ते वहुरूपिणे । त्र्यम्ब-काय त्रिधामान्तश्चारिणे च त्रिचक्षुषे ॥३१॥ पेशलोपायलभ्याय भ्रान्तिभाजां महात्मने ॥३२॥ दुर्लभाय मलाक्रान्तचेतसां तु नमोनमः ॥३२॥ भवप्रदाय दुष्टानां भवाय भवभेदिने । भव्यानां तन्मयानां तु सर्वदाय नमोनमः ॥३३॥ अणूनां मुक्तये घोरघोर-संसारदायिने । घोरातिघोरमूढानां तिरस्कर्त्रे नमोनमः ॥३४॥ इत्येवं स्तोत्रराजेशं महाभैरवभाषितम् । योगिनीनां परं सारं न दद्याद्यस्य कस्यचित् ॥ अदीक्षिते शठे क्रूरे निःसत्ये शुचिवर्जिते । नास्तिके च खले मूर्खे प्रमत्ते विप्लुतेऽलसे ॥ गुरुशास्त्रसदा-चारदूषके कलहप्रिये । निन्दके चुम्भके क्षुद्रेऽसमयज्ञे च दाम्भिके ॥ दाक्षिण्यरहिते पापे धर्महीने च गर्विते । भक्तियुक्ते प्रदातव्यं न देयं परदीक्षते ॥ पशूनां सन्निधौ देवि नोच्चार्यं सर्वथा क्वचित् । अस्यैव स्मृतमात्रस्य विघ्ना नश्यन्ति सर्वशः गुह्यका यातुधानाश्च वेताला राक्षसादयः । डाकिन्यश्च पिशाचाश्च क्रूर-सत्वाश्च पूतनाः ॥ नश्यन्ति सर्वे पठितस्तोत्रस्यास्य प्रभावतः । खेचरी भूचरी चैव डाकिनी शाकिनी तथा ॥ ये चान्ये बहुधा भूता

दुष्टसत्त्वा भयानकाः । व्याधिदौर्भिक्षदौर्भाग्यमारीमोहविषादयः ॥
गजव्याघ्रादयो भीताः पलायन्ते दिशो दश । सर्वे दुष्टाः प्रण-
श्यन्ति चेत्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ इति श्रीललितस्वच्छन्दे बहुरूप-
गर्भस्तोत्र राजः सम्पूर्णः ॥

❀ ❀ ❀

(२२) अथ साम्बसदाशिवकवचस्तोत्रम्

अस्य श्रीसाम्बसदाशिवकवचराजस्य, ऋषभयोगीश्वर
ऋषिः, अनुष्टुप्च्छन्दः श्रीसाम्बसदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः
शक्तिः, शिवायेति कीलकं, श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थे पाठे विनि-
योगः ॥ ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, न तर्जनीभ्यां नमः, मः मध्य-
माभ्यां नमः, शिअनामिकाभ्यां नमः वा कनिष्ठकाभ्यां नमः,
य करतलकरपृष्ठभ्यां नमः ॥ ॐ हृदयाय नमः, न शिरसे
स्वाहा, मः शिखायै वषट्, शि कवचाय हुँ, वा नेत्राभ्यां
वौषट्, य अस्त्राय फट् । प्राणायामः ॥ ध्यानं । ध्यायेन्नित्यं
महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं
परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् । पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममर-
गणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं
त्रिनेत्रम् ॥ "तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः
प्रचोदयात्" ॥३॥ ऋषभ उवाच ॥ नमस्कृत्य महादेवं विश्व-
व्यापिनमीश्वरम् । वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥१॥
शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः । जितेन्द्रियो जित-
प्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम् ॥२॥ हृत्पुण्डरीकान्तरसन्निविष्टं स्व-
तेजसा व्याप्तनभोवकाशम् । अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्याये-
त्परानन्दमयं महेशम् ॥३॥ ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदा-

न्दनिमग्नचेताः । षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात्कवचेन रक्षाम् ॥४॥ मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गंभीरे । यन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम् ॥५॥ सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा । अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयादशेषात् ॥६॥ यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं पायात्स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः । योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति सञ्जीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः ॥७॥ कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः । स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादिभीतेर्निखिलाच्च तापात् ॥८॥ यो वायुरूपेण चलत्वमाप प्राणादिभिः सोऽवतु मां दृढाय । सव्योमरूपो निखिलावकाशो ह्याकाशरूपेण करोतु रक्षाम् ॥९॥ यः कालकृत्कालभयाच्च सोऽव्यात् दिवाकरत्वेन जगत्त्रये माम् । निशाकरत्वेन वनस्पतीशो यो वा मनः सोऽवतु निश्चलाय ॥ १० ॥ यो वेद नाम व्यवहारभोक्ता जीवस्वरूपेण हृषीकसाक्षी । स पातु सत्कर्मफलप्रदो मां मखाग्र्यविध्वंसकयज्ञमूर्तिः ॥११॥ प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः । चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रम् ॥१२॥ कुठारवेदाङ्कुशपाशशूलकपालढक्काक्षगुणान्ददानः । चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम् ॥१३॥ कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकावभासो वेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः । त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः सद्योधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम् ॥१४॥ वराक्षमालाभयढक्काहस्तः सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥ १५ ॥ वेदाभयेष्टाङ्कुशपाशटङ्ककपालढक्काक्षत्रिशूलपाणिः । सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः ॥१६॥ मूर्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिर्भालं ममा-

व्यादऽथ भालनेत्रः । नेत्रे ममाव्याद्भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः ॥१७॥ पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः कपोलमव्यात्सततं कपाली । वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः ॥१८॥ कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः स्कन्दौ वृषस्कन्दगतः सदाव्यात् । स्तनद्वयं पातु सदा महेशः पार्श्वद्वयं मे भगवान्गिरीशः ॥१९॥ भुजद्वयं पातु भुजङ्गधारी पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः । दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षः-स्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात् ॥२०॥ ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी । हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात्कटिं धूर्जटिरीश्वरो मे ॥ २१ ॥ गुह्यं हरो रक्षतु वासुकीशः पृष्ठं ममाव्याद्भगनापगेशः । ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो जानुद्वये मे जगदीश्वरोऽव्यात् ॥२२॥ जण्घाद्वयं पुङ्गवकेतुरव्यात्पादौ ममाव्यात्सुरवन्द्यपादः । पायान्ममान्तःकरणं परात्मा सर्वाङ्गमव्यान्मम सर्वगुप्तः ॥ २३ ॥ महेश्वरः पातु दिनाद्ययामे मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः । त्रिलोचनः पातु तृतीययामे वृषध्वजः पातु दिनान्तयामे ॥२४॥ पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे । गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम् ॥२५॥ अन्तःस्थितं रक्षतु शंकरो मां स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम् । तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात् ॥२६॥ तिष्ठन्तमव्याभ्दुवनैकनाथः पायाद्व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः । वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः शयानम् ॥२७॥ मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः । अरण्यवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगव्याधउदारशक्तिः ॥२८॥ कल्पान्तकालोग्रपटुप्रकोपस्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः । घोरारिसेनार्णवदुर्निवारमहाभयाद्रक्षतु वीरभद्रः ॥२९॥ पत्त्यश्वमातङ्गरथावरूथवत्सह-

स्रलक्षायुतकोटिभीषणम् । अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां छिन्द्या-न्मृडो घोरकुठारधारया ॥३०॥ निहन्तु दस्यून्प्रलयानलार्चिर्ज्व-लत्त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य । शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान्सन्त्रास-यत्वीशधनुः पिनाकः ॥३१॥ दुःस्वप्नदुःशकुनदुर्गमदौर्मनस्यदुर्भिक्ष-दुर्व्यसनदुःसहदुर्यशांसि । उत्पातशापविषभीतिमसन्दग्रहार्ति व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः ॥३२॥ ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सर्वयन्त्राधिष्ठिताय सर्वतन्त्रस्वरूपाय सर्वमन्त्र-स्वरूपाय सर्वतत्त्वविदुराय ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय पार्व-तीमनोहरप्रियाय सोमसूर्याग्निलोचनाय भस्मोद्धूलितविग्रहाय महामुकुटधारिणे माणिक्यभूषणाय सृष्टिस्थितिप्रलयकालाग्निरुद्रा-वताराय दक्षाध्वरध्वंसकाय महाकालभेदनाय मूलाधारैकनिलयाय तत्त्वातीताय गङ्गाधराय सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्त-साराय त्रिवर्गसाधनाय अनेककोटिब्रह्माण्डजनकाय अनन्तवासु-कितक्षककार्कोटकशङ्खपालकुलिकपद्ममहापद्मेत्यष्टनागकुलभूषणाय प्रणवस्वरूपाय चिदाकाशाय आकाशदिक्स्वरूपाय सकलग्रहनक्ष-त्रमालिने सकलाय सकलकलङ्करहिताय सकललोकैककर्त्रे सक-ललोकैकभर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकल-लोकैकवरप्रदाय सकलनिगमगुह्याय सकलवेदान्तपारगाय सक-लदुरितार्तिभञ्जनाय सकलजगदभयङ्कराय सकललोकैकश-ङ्कराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजावासाय निर्गुणाय नीरूपाय निराभासाय निरामयाय निरातंकाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय निर्द्वन्द्वाय निःसङ्गाय निर्मलाय निर्गमाय निरुपम-विभवाय निर्भयाय निर्लोभाय निष्क्रोधाय निश्चिन्ताय निरहं-काराय निराकुलाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदान-न्दाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय तेजोमयाय जय जय रुद्र महारुद्रवीरभद्रावतार महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपा-

लमालाधर खट्वाणगखणगचर्मपाशांकुशडमरुकशूलचापबाणगदा-शक्तिभिण्डिपालतोमरमुसलमुद्गरप्रासपट्टिशपाशपरशुपरिघभुसण्डीश-तघ्नीचक्राद्यायुधभीषणाकर सहस्रमुख दंष्ट्राकरालविकटाट्टहासवि-स्फारितब्रह्माण्डमण्डल नागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहारवलय नागेन्द्रच-र्माम्बरधर मृत्युञ्जय त्र्यंबकत्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्व-रूप वृषभवाहन विषभीषण विश्वतोमुख सर्वतो मां रक्ष रक्ष ज्वल ज्वल प्रज्वल २ महामृत्युभयं नाशय २ विषसर्पभयं शमय २ रोगभयमुत्सादय २ चोरभयं नाशय २ चोरान्मारय २ मम-शत्रून् उच्चाटय २ त्रिशूलेन विदारय २ कुठारेण भिन्धि २ खड्गेन छिन्धि २ खट्वाण्गेन विपोथय २ मुसुलेन निष्पेषय २ बाणैः सन्ताडय २ तृतीयनेत्रेण सन्तापय २ रक्षांसि भीषय २ भूतान् विद्रावय २ कूष्माण्ड़वेतालभूतमारीब्रह्मराक्षसगणान् सन्त्रासय २ ममाऽभयं कुरु २ वित्रस्तं मामाश्वासय २ नरकम-हाभयान्मामुद्धर २ संजीवय २ क्षुत्तड्भ्यां मामाप्यायय २ दुःखातुरं मामानन्दय २ शिवकवचेन मामाच्छादय २ त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ ऋषभ उवाच । इतीदं कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया । सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम् ॥१॥ यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम् । न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात् ॥ २ ॥ क्षीणायुः प्राप्तमृत्युर्वा महारोगहतोऽपि वा । सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घ-मायुश्च विन्दति ॥ ३ ॥ सर्वदारिद्र्यशमनं सर्वमणगल्यवर्धनम् । यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते ॥ ४ ॥ महापातक-संघातैर्मुच्यते चोपपातकैः । देहान्ते मुक्तिमाप्नोति शिव-वर्मानुभावतः ॥ ५ ॥ त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम् । धारयस्व मया धत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ॥ ६ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे शिवकवचं सम्पूर्णम ॥ ★ ★ ★

॥ श्रीरस्तु ॥

(२३) गायत्रीसहस्रनामस्तोत्रम् ।

ध्यानम्—

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् । गायत्रीं वरदाभयाण्कुशकशाःशुभ्रं कपालं गुणं शङ्खंचक्रमथारविन्दयुगलंहस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

ओं आयातु वर्दा देवी त्रिक्षरी ब्रह्मवादिनी ।
गायत्री छन्साः मातर ब्रह्मयोनि नमस्तुते ३

ॐ तत्काररूपा तत्त्वाज्ञा तत्पदार्थस्वरूपिणी ।
तपस्स्वाध्यायनिरता तपस्विजनसंनुता ॥ १ ॥

तत्कीर्तिगुणसम्पन्ना तथ्यवाक्च तपोनिधिः ।
तत्त्वोपदेशसम्बन्धा तपोलोकनिवासिनी ॥ २ ॥

तरुणादित्यसंकाशा तप्तकाञ्चनभूषणा ।
तमोऽपहारिणी तन्त्री तारिणी ताररूपिणी ।३।

तलादिभुवनान्तःस्था तर्कशास्त्रविधायिनी ।
तन्त्रसारा तन्त्रमाता तन्त्रमार्गप्रदर्शिनी ॥ ४ ॥

तत्त्वा तन्त्रविधानज्ञा तन्त्रस्था तन्त्रसाक्षिणी ।
तदेकध्याननिरता तत्त्वज्ञानप्रबोधिनी ॥५॥

तन्नाममन्त्रसुप्रीता तपस्विजनसेविता ।
सकाररूपा सावित्री सर्वरूपा सनातनी ॥६॥

संसारदुःखशमनी सर्वयागफलप्रदा ।
सकला सत्यसंकल्पा सत्यासत्यप्रदायिनी ॥७॥

संतोषजननी सारा सत्यलोकनिवासिनी ।
समुद्रतनयाराध्या सामगानप्रिया सती ॥८॥

समाना सामदेवी च समस्तसुरसेविता ।
सर्वसम्पत्तिजननी सद्गुणा सकलेष्टदा ॥ ९ ॥

सनकादिमुनिध्येया समानाधिकवर्जिता ।
साध्या सिद्धा सुधावासा सिद्धिःसाध्यप्रदायिनी ।१०।

सद्युगाराध्यनिलया समुत्तीर्णा सदाशिवा ।
सर्ववेदान्तनिलया सर्वशास्त्रार्थगोचर ॥११॥ (स० ७)

सहस्रदलपद्मस्था सर्वज्ञा सर्वतोमुखी ।
समया समयाचारा सदसद्ग्रन्थिभेदिनी ॥१२॥

सप्तकोटिमहामन्त्रमाता सर्वप्रदायिनी ।
सगुणा सम्भ्रमा साक्षा सर्वचैतन्यरूपिणी ॥१३॥

सत्कीर्तिः सात्त्विकी साध्वी सच्चिदानन्दरूपिणी ।
संकल्परूपिणी संध्या सालग्रामनिवासिनी ॥१४॥

सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता सत्यज्ञानप्रबोधिनी ।
विकाररूपा विप्रश्रीर्विप्राराधनतत्परा ॥१५॥

विप्रप्रीर्विप्रकल्याणी विप्रवाक्यस्वरूपिणी ।
विप्रमन्दिरमध्यस्था विप्रवादविनोदिनी ॥१६॥

विप्रोपाधिविनिर्भेत्री विप्रहत्याविमोचनी ।
विप्रत्राताविप्रगोत्राविप्रगोत्रविवर्धिनी ॥१७॥

विप्रभोजनसंतुष्टा विष्णुरूपा विनोदिनी ।
विष्णुमाया विष्णुवन्द्या विष्णुगर्भाविचत्रिणी ॥१८॥

वैष्णवी विष्णुभगिनी विष्णुमायाविलासिनी ।
विकाररहिता विश्वविज्ञानघनरूपिणी ॥१९॥

विबुधा विष्णुसंकल्पा विश्वामित्रप्रसादिनी ।
विष्णुचैतन्यनिलया विष्णुस्वा विश्वसाक्षिणी ।२०।

विवेकिनी वियद्रूपा विजया विश्वमोहिनी ।
विद्याधरी विधानज्ञा वेदतत्त्वार्थरूपिणी ॥२१॥

विरूपाक्षी विराड्रूपा विक्रमा विश्वमणगला ।
विश्वम्भरासमाराध्याविश्वभ्रमणकारिणी ॥ २२ ॥

विनायकी विनोदस्था वीरगोष्ठीविवर्धिनी ।
विवाहरहिता विन्ध्या विन्ध्याचलनिवासिनी ॥२३॥
विद्याविद्याकरी विद्या विद्याविद्याप्रबोधिनी ।
विमला विभवा वेद्या विश्वस्था विविधोज्ज्वला ॥२४॥
वीरमध्या वरारोहा वितन्त्रा विश्वनायिका ।
वीरहत्याप्रशमनी विनम्रजनपालिनी ॥२५॥
वीरधीर्विविधाकारा विरोधिजननाशिनी ।
तुकाररूपा तुर्यश्रीस्तुलसीवनवासिनी ॥ २६ ॥
तुरङ्गी तुरगारूढा तुलादानफलप्रदा ।
तुलामाघस्नानतुष्टा तुष्टिपुष्टिप्रदायिनी ॥२७॥
तुरङ्गमप्रसंतुष्टा तुलिता तुल्यमध्यगा ।
तुङ्गोत्तुङ्गा तुङ्गकुचा तुहिनाचलसंस्थिता ।२८।
तुम्बुरादिस्तुतिप्रीता तुषारशिखरीश्वरी ।
तुष्टा च तुष्टिजननी तुष्टलोकनिवासिनी ॥२९॥
तुलाधारा तुलामध्या तुलस्था तुर्यरूपिणी ।
तुरीयगुणगम्भीरा तूर्यनादस्वरूपिणी ॥३०॥
तूर्यविद्यालास्यतुष्टा तूर्यशास्त्रार्थवादिनी ।
तुरीयशास्त्रतत्त्वज्ञा तूर्यवादविनोदिनी ॥३१॥
तूर्यनादान्तनिलया तुर्यानन्दस्वरूपिणी ।
तुरीयभक्तिजननी तुर्यमार्गप्रदर्शिनी ॥३२॥
वकाररूपा वागीशी वरेण्या वरसंविधा ।
वरा वरिष्ठा वैदेही वेदशास्त्रप्रदर्शिनी ॥३३॥
विकल्पशमनी वाणी वाञ्छितार्थफलप्रदा ।
वयःस्था च वयोमध्या वयोऽवस्थाविवर्जिता ॥३४॥
वन्दिनी वादिनी वर्या वाङ्मयी वीरवन्दिता ।
वानप्रस्थाश्रमस्था च वनदुर्गा वनालया ॥३५॥

वनजाक्षी वनचरी वनिता विश्वमोहिनी ।
वसिष्ठवामदेवादिवन्द्या वन्द्यस्वरूपिणी ॥ ३६ ॥
वैद्या वैद्यचिकित्सा च वषट्कारी वसुन्धरा ।
वसुमातावसुत्राता वसुजन्मविमोचनी ॥३७॥
वसुप्रदा वासुदेवी वासुदेवमनोहरी ।
वासवार्चितपादश्रीर्वासवारिविनाशिनी ॥ ३८ ॥
वागीशी वाङ्मनस्था च वशिनी वनवासभूः ।
वामदेवी वरारोहा वाद्यघोषणतत्परा ॥ ३९ ॥
वाचस्पतिसमाराध्या वेदमाता विनोदिनी ।
रेकाररूपा रेवा च रेवातीरनिवासिनी ॥४०॥
राजीवलोचना रामा रागिणी रतिवन्दिता ।
रमणीरामजप्ता च राज्यपा रजताद्रिगा ॥ ४१ ॥
राकिणो रेवती रक्षा रुद्रजन्मा रजस्वला ।
रेणुकारमणी रम्या रतिवृद्धारता रतिः ॥४२॥
रावणानित्यदानन्दा राजश्री राजशेखरी ।
रणमध्या रथारूढा रविकोटिसमप्रभा ॥ ४३ ॥
रविमण्डलमध्यस्था रजनी रविलोचना ।
रथाणगपाणी रक्षोन्घी रागिणी रावणार्चिता ॥४४॥
रम्भादिकन्यकाराध्याराज्यदाराज्यवर्धिनी ।
रजताद्रीशसक्थिस्था रम्या राजीवलोचना ॥ ४५ ॥
रम्यवाणी रमाराध्या राज्यधात्री रतोत्सवा ।
रेवती च रतोत्साहा राजहृद्रोगहारिणी ॥४६॥
रणप्रवृद्धमधुरा रणमण्डपमध्यगा ।
रञ्जिता राजजननी रम्या राकेन्दुमध्यगा ॥४७॥
रविणी रागिणी रञ्या राजराजेश्वरार्चिता ।
रजताचलवासिनी ॥४८॥
राजन्वती राजनीती

राघवार्चितपादश्री राघवी राघवप्रिया ।
रत्नसागरमध्यस्था रत्नद्वीपनिवासिनी ॥४९॥
रत्नप्राकारमध्यस्था रत्नमण्डपमध्यगा ।
रत्नाभिषेकसंतुष्टा रत्नाङ्गी रत्नदायिनी ॥५०॥
णिकाररूपिणी नित्या नित्यतृप्ता निरञ्जना ।
निद्रात्ययविशेषज्ञा नीलजीमूतसंनिभा ॥५१॥
नीवारशूकवत्तन्वी नित्यकल्याणरूपिणी ।
नित्योत्सवा नित्यपूज्या नित्यानन्दस्वरूपिणी ॥५२॥
निर्विकल्पा निर्गुणस्था निश्चिन्ता निरुपद्रवा ।
निस्संशया निरीहा च निर्लोभा नीलमूर्धजा ॥५३॥
निखिलागममध्यस्था निखिलागमसंस्थिता ।
नित्योपाधिविनिर्मुक्ता नित्यकर्मफलप्रदा ॥५४॥
नीलग्रीवा निराहारा निरञ्जनवरप्रदा ।
नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी ॥५५॥
नारायणी निरीहा च निर्मला निर्गुणप्रिया ।
निश्चिन्ता निगमाचारनिखिलागमवेदिनी ॥५६॥
निमेषा निमिषोत्पन्ना निमेषाण्डविधायिनी ।
निवातदीपमध्यस्था निर्विघ्ना नीचनाशिनी ॥५७॥
नीलवेणी नीलखण्डा निर्विषा निष्कशोभिता ।
नीलांशुकपरीधाना निन्दाघ्नी च निरीश्वरी ॥५८॥
निश्वासोच्छ्वासमध्यस्था नित्ययानविलासिनी ।
यंकाररूपा यन्त्रेशी यन्त्री यन्त्रयशस्विनी ॥५९॥
यन्त्राराधनसंतुष्टा यजमानस्वरूपिणी ।
योगिपूज्या यकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी ॥६०॥
यमघ्नी यमकल्पा च यशःकामा यतीश्वरी ।
यमादियोगनिरतायतिदुःखापहारिणी ॥६१॥

यज्ञा यज्वा यजुर्गेया यज्ञेश्वरपतिव्रता ।
यज्ञसूत्रप्रदा यष्ट्री यज्ञकर्मफलप्रदा ॥६२॥
यवाण्कुरप्रिया यन्त्री यवदघ्नी यवार्चिता ।
यज्ञकर्त्री यज्ञभोक्त्री यज्ञाङ्गी यज्ञवाहिनी ॥६३॥

यज्ञसाक्षी यज्ञमुखी यजुषी यज्ञरक्षणी ।
भकाररूपा भद्रेशी भद्रकल्याणदायिनी ॥६४॥
भक्तप्रिया भक्तसखी भक्ताभीष्टस्वरूपिणी ।
भगिनी भक्तसुलभा भक्तिदा भक्तवत्सला ॥६५॥

भक्तचैतन्यनिलया भक्तबन्धविमोचना ।
भक्तस्वरूपिणी भाग्या भक्तारोग्यप्रदायिनी ॥६६॥
भक्तमाता भक्तगम्या भक्ताभीष्टप्रदायिनी ।
भास्करी भैरवी भोग्या भवानी भयनाशिनी ॥६७॥

भद्रात्मिका भद्रदायी भद्रकाली भयंकरी ।
भगनिष्यन्दिनी भूम्नी भवबन्धविमोचनी ॥६८॥
भीमा भवसखी भङ्गी भण्गुरा भीमदर्शिनी ।
भल्ली भल्लीधरा भीरुर्भेरुण्डा भीमपापहा ॥६९॥

भावज्ञा भोगदात्री च भवघ्नी भूतिभूषणा ।
भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ॥७०॥
भ्रामरी भ्रमरी भारी भवसागरतारिणी ।
भण्डासुरवधोत्साहा भाग्यदा भावनोदिनी ॥७१॥

गोकाररूपा गोमाता गुरुपत्नी गुरुप्रिया ।
गोरोचनप्रिया गौरी गोविन्दगुणवर्धिनी ॥७२॥
गोपालचेष्टासंतुष्टा गोवर्धनविवर्धिनी ।
गोविन्दरूपिणी गोप्त्री गोकुलानां विवर्धिनी ॥७३॥

गीता गीतप्रिया गेया गोदा गोरूपधारिणी ।
गोपी गोहत्यशमनी गुणिनी गुणविग्रहा ॥७४॥

गोविन्दजननी गोष्ठा गोप्रदा गोकुलोत्सवा ।
गोचरी गौतमी गोप्त्री गोमुखी गुरुवासिनी ॥७५॥
गोपालो गोमयी गुम्फा गोष्ठी गोपुरवासिनी ।
गरुडी गमनश्रेष्ठा गारुडी गरुडध्वजा ॥७६॥
गम्भीरा गण्डकी गङ्गा गरुडध्वजवल्लभा ।
गगनस्था गयावासा गुणवृत्तिर्गुणोद्भवा ॥७७॥
देकाररूपा देवेशी दृग्रूपा देवतार्चिता ।
देवराजेश्वरार्धाङ्गी दीनदैन्यविमोचनी ॥७८॥
देशकालपरिज्ञाना देशोपद्रवनाशिनी ।
देवमाता देवमोहा देवदानवमोहिनी ॥७९॥
देवेन्द्रार्चितपादश्रीर्देवदेवप्रसादिनी ।
देशान्तरीदेशरूपादेवालयनिवासिनी ॥८०॥
देशभ्रमणसंतुष्टा देशस्वास्थ्यप्रदायिनी ।
देवयाना देवता च देवसैन्यप्रपालिनी ॥८१॥
वकाररूपा वाग्देवी वेदमानसगोचरा ।
वैकुण्ठदेशिका वेद्या वायुरूपा वरप्रदा ॥८२॥
वक्रतुण्डार्चितपदा वक्रतुण्डप्रसादिनी ।
वैचित्र्यरूपा वसुधा वसुस्थाना वसुप्रिया ॥८३॥
वषट्कारस्वरूपा च वरारोहा वरासना ।
वैदेहीजननी वेद्या वैदेहीशोकनाशिनी ॥८४॥
वेदमाता वेदकन्या वेदरूपा विनोदिनी ।
वेदान्तवादिनी चैव वेदान्तनिलयप्रिया ॥८५॥
वेदश्रवा वेदघोषा वेदगीताविनोदिनी ।
वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञा वेदमार्गप्रदर्शिनी ॥८६॥
वेदोक्तकर्मफलदा वेदसागरवाडवा ।
वेदवन्द्या वेदगुह्या वेदाश्वरथवाहिनी ॥८७॥

वेदचक्रा वेदवन्द्या वेदाङ्गो वेदवित्कविः ।
सकाररूपा सामान्ता सामगानविचक्षणा ॥८८॥
साम्राज्ञी सामरूपा च सदानन्दप्रदायिनी ।
सर्वदृक्संनिविष्टा च सर्वसम्प्रेषिणी सहा ॥८९॥

सव्यापसव्यदा सव्यसध्रीची च सहायिनी ।
सकला सागरा सारा सार्वभौमस्वरूपिणी ॥९०॥
संतोषजननी सेव्या सर्वेशी सर्वरञ्जनी ।
सरस्वती समाराध्या सामदा सिंधुसेविता ॥९१॥

सम्मोहिनी सदामोहा सर्वमाङ्गल्यदायिनी ।
समस्तभुवनेशानी सर्वकामफलप्रदा ॥९२॥
सर्वसिद्धिप्रदा साध्वी सर्वज्ञानप्रदायिनी ।
सर्वदारिद्र्यशमनी सर्वदुःखविमोचनी ॥९३॥

सर्वरोगप्रशमनी सर्वपापविमोचनी ।
समदृष्टिः समगुणा सर्वगोप्त्री सहायिनी ॥९४॥
सामर्थ्यवाहिनीसांख्या सान्द्रानन्दपयोधरा ।
संकीर्णमन्दिरस्थाना साकेतकुलपालिनी ॥९५॥

संहारिणी सुधारूपा साकेतपुरवासिनी ।
सम्बोधिनी समस्तेशी सत्यज्ञानस्वरूपिणी ॥९६॥
सम्पत्करी समानाङ्गी सर्वभावसुसंस्थिता ।
संध्यावन्दनसुप्रीता सन्मार्गकुलपालिनी ॥९७॥

संजीविनी सर्वमेधा सभ्या साधुसुपूजिता ।
समिद्धा सामिधेनी च सामान्या सामवेदिनी ॥९८॥
समुत्तीर्णा सदाचारा संहारा सर्वपावनी ।
सर्पिणी सर्पमाता च सामदानसुखप्रदा ॥९९॥

सर्वरोगप्रशमनी सर्वज्ञत्वफलप्रदा ।
संक्रमा समदा सिन्धुः सर्गादिकरणक्षमा ॥१००॥

संकटा संकटहरा सकुण्कुमविलेपना ।
सुमुखी सुमुखप्रीता समानाधिकवर्जिता ॥१०१॥
संस्तुता स्तुतिसुप्रीता सत्यवादी सदास्पदा ।
धीकाररूपा धीमाता धीरा धीरप्रसादिनी ॥१०२॥
धीरोत्तमा धीरधीरा धीरस्था धीरशेखरा ।
धृतिरूपा धनाढ्या च धनपा धनदायिनी ॥१०३॥
धीरूपा धीरवन्द्या च धीप्रभा धीरमानसा ।
धीगेया धीपदस्था च धीशानी धीप्रसादिनी ॥१०४॥
मकाररूपा मैत्रेयी महामङ्गलदेवता ।
मनोवैकल्यशमनी मलयाचलवासिनी ॥१०५॥
मलयध्वजराजश्रीर्मायामोहविभेदिनी ।
महादेवी महारूपा महाभैरवपूजिता ॥१०६॥
मनुप्रीता मन्त्रमूर्तिर्मन्त्रवश्या महेश्वरी ।
मत्तमातङ्गगमना सधुरा मेरुमण्डपा ॥१०७॥
महागुप्ता महाभूतमहाभयविनाशिनी ।
महाशौर्या मन्त्रिणी च महावैरिविनाशिनी ॥१०८॥
महालक्ष्मीर्महागौरी महिषासुरमर्दिनी ।
मही च मण्डलस्था च मधुरागमपूजिता ॥१०९॥
मेधा मेधाकरी मेध्या माधवी मधुमर्दिनी ।
मन्त्रा मन्त्रमयीमान्या माया माधवमन्त्रिणी ॥११०॥
मायादूरा च मायावी मायाज्ञा मानदायिनी ।
मायासंकल्पजननी मायामयविनोदिनी ॥१११॥
मायाप्रपञ्चशमनी मायासंहाररूपिणी ।
मायामन्त्रप्रसादा च मायाजनविमोहिनी ॥११२॥
महापथा महाभोगा महाविघ्नविनाशिनी ।
महानुभावा मन्त्राढ्या महामण्गलदेवता ॥११३॥

हिकाररूपा हृद्या च हितकार्यप्रवर्धिनी ।
हेयोपाधिविनिर्मुक्ता हीनलोकविनाशिनी ॥११४॥
ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या ह्रींदेवी ह्रींस्वभाविनी ।
ह्रींमन्दिरा हितकरी हृष्टा च ह्रींकुलोद्भवा ॥११५॥

हितप्रज्ञा हितप्रीता हितकारुण्यवर्धिनी ।
हिताशिनी हितक्रोधा हितकर्मफलप्रदा ॥११६॥
हिमा हैमवती हैम्नी हेमाचलनिवासिनी ।
हिमागजा हितकरी हितकर्मस्वभाविनी ॥११७॥

धीकाररूपा धिषणा धर्मरूपा धनेश्वरी ।
धनुर्धरा धराधारा धर्मकर्मफलप्रदा ॥११८॥
धर्माचारा धर्मसारा धर्ममध्यनिवासिनी ।
धनुर्विद्या धनुर्वेदा धन्या धूर्तविनाशिनी ॥११९॥

धनधान्या धेनुरूपा धनाढ्या धनदायिनी ।
धनेशी धर्मनिरता धर्मराजप्रसादिनी ॥१२०॥
धर्मस्वरूपा धर्मेशी धर्माधर्मविचारिणी ।
धर्मसूक्ष्मा धर्मगेहा धर्मिष्ठा धर्मगोचरा ॥१२१॥

योकाररूपा योगेशी योगस्था योगरूपिणी ।
योग्या योगीशवरदा योगमार्गनिवासिनी ॥१२२॥
योगासनस्था योगेशी योगमायाविलासिनी ।
योगिनी योगरक्ता च योगाङ्गी योगविग्रहा ॥१२३॥

योगवासा योगभोग्या योगमार्गप्रदर्शिनी ।
योकाररूपा योधाढ्या योद्ध्री योधसुतत्परा ॥१२४॥
योगिनी योगिनीसेव्या योगज्ञानप्रबोधिनी ।
योगेश्वरप्राणनाथा योगीश्वरहृदिस्थिता ॥

योगा योगक्षेमकर्त्री योगक्षेमविधायिनी ।
योगराजेश्वराराध्या योगानन्दस्वरूपिणी ॥१२५॥

नकाररूपा नादेशी नामपारायणप्रिया ।
नवसिद्धिसमाराध्या नारायणमनोहरी ॥१२७॥
नारायणी नवाधारा नवब्रह्मार्चिताङ्घ्रिका ।
नगेन्द्रतनयाराध्या नामरूपविवर्जिता ॥१२८॥
नरसिंहार्चितपदा नवबन्धविमोचनी ।
नवग्रहार्चितपदा नवमीपूजनप्रिया ॥१२९॥
नैमित्तिकार्थफलदा नन्दितारिविनाशिनी ।
नवपीठस्थिता नादा नवर्षिगणसेविता ॥१३०॥
नवसूत्रविधानज्ञा नैमिषारण्यवासिनी ।
नवचन्दनदिग्धाङ्गीनवकुण्कुमधारिणी ॥१३१॥
नववस्त्रपरीधाना नवरत्नविभूषणा ।
नव्यभस्मविदिग्धाङ्गी नवचन्द्रकलाधरा ॥१३२॥
प्रकाररूपा प्राणेशी प्राणसंरक्षणी परा ।
प्राणसंजीविनी प्राच्या प्राणिप्राणप्रबोधिनी ॥१३३॥
प्रज्ञा प्राज्ञा प्रभापुष्पा प्रतीची प्रबुधप्रिया ।
प्राचीना प्राणिचित्तस्था प्रभा प्रज्ञानरूपिणी ॥१३४॥
प्रभातकर्मसंतुष्टा प्राणायामपरायणा ।
प्रायज्ञा प्रणवा प्राणा प्रवृत्तिःप्रकृतिः परा ॥१३५॥
प्रबन्धा प्रथमा चैव प्रगा प्रारब्धनाशिनी ।
प्रबोधनिरता प्रेक्ष्या प्रबन्धा प्राणसाक्षिणी ॥१३६॥
प्रयागतीर्थनिलया प्रत्यक्षपरमेश्वरी ।
प्रणवाद्यन्तनिलया प्रणवादिः प्रजेश्वरी ॥१३७॥
चोकाररूपा चोरघ्नी चोरबाधाविनाशिनी ।
चैतन्यचेतनस्था च चतुरा च चमत्कृतिः ॥१३८॥
चक्रवर्तिकुलाधारा चक्रिणी चक्रधारिणी ।
चित्तगेया चिदानन्दा चिद्रूपा चिद्विलासिनी ॥१३९॥

चिन्ता चित्तप्रशमनी चिन्तितार्थफलप्रदा ।
चाम्पेयी चम्पकप्रीता चण्डी चण्डाट्टहासिनी ॥१४०॥
चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डविनाशिनी ।
चकोराक्षी चिरप्रीता चिकुरा चिकुरालका ॥१४१॥
चैतन्यरूपिणी चैत्री चेतना चित्तसाक्षिणी ।
चित्रा चित्रविचित्राङ्गी चित्रगुप्तप्रसादिनी ॥१४२॥
चलना चक्रसंस्था च चाम्पेयी चलचित्रिणी ।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था चन्द्रकोटिसुशीतला ॥१४३॥
चन्द्रानुजसमाराध्या चन्द्रा चण्डमहोदरी ।
चर्चितारिश्चन्द्रमाता चन्द्रकान्ता चलेश्वरी ॥१४४॥
चराचरनिवासी च चक्रपाणिसहोदरी ।
दकाररूपा दत्तश्रीर्दारिद्र्यच्छेदकारिणी ॥१४५॥
दत्तात्रेयस्य वरदा दयालुर्दीनवत्सला ।
दक्षाराध्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥१४६॥
दक्षा दाक्षायणी दीक्षा दृष्टा दक्षवरप्रदा ।
दक्षिणा दक्षिणाराध्या दक्षिणामूर्तिरूपिणी ॥१४७॥
दयावती दमस्वान्ता दनुजारिर्दयानिधिः ।
दन्तशोभानिभा देवी दमनी दाडिमस्तनी ॥१४८॥
दण्डा च दमयित्री च दण्डिनी दमनप्रिया ।
दण्डकारण्यनिलया दण्डकारिविनाशिनी ॥१४९॥
दंष्ट्राकरालवदना दण्डशोभा दरोदरी ।
दरिद्रारिष्टशमनी दम्या दमनपूजिता ॥१५०॥
दानवार्चितपादश्रीर्द्रविणा द्राविणी दया ।
दामोदरी दानवारिर्दामोदरसहोदरी ॥१५१॥
दात्री दानप्रिया दाम्नी दानश्रीर्द्विजवन्दिता ।
दन्तिगा दण्डिनी दूर्वा दधिदुग्धस्वरूपिणी ॥१५२॥

दाडिमीबीजसंदोहदन्तपङ्क्तिविराजिता ।
दर्पणा दर्पणस्वच्छा द्रुममण्डलवासिनी ॥१५३॥
दशावतारजननी दशदिग्दैवपूजिता ।
दमा दशदिशा दृश्या दशदासी दयानिधिः ॥१५४॥
देशकालपरिज्ञाना देशकालविशोधिनी ।
दशम्यादिकलाराध्या दशग्रीवविरोधिनी ॥१५५॥
दशापराधशमनी दशवृत्तिफलप्रदा ।
यात्काररूपिणी याज्ञी यादवी यादवार्चित ॥१५६॥
ययातिपूजनप्रीता याज्ञिकी याज्ञकप्रिया ।
यजमाना यदुप्रीता यामपूजाफलप्रदा ॥१५७॥
यशस्विनी यमाराध्या यमकन्या यतीश्वरी ।
यमादियोगसंतुष्टा योगीन्द्रहृदया यमा ॥१५८॥
यमोपाधिविनिर्मुक्ता यशस्यविधिसंनुता ।
यवीयसी युवप्रीता यात्रानन्दा यतीश्वरी ॥१५९॥
योगप्रिया योगगम्या योगध्येया यथेच्छगा ।
यागप्रिया याज्ञसेनी योगरूपा यथेष्टदा ॥१६०॥

(श्रीगायत्रीदिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्)

★ ★ ★